CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2004 with Solution PDF-Set 2/1/1

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 6, 9, 13 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1(क). निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

अजहुँ न निकसै प्राण कठोर ।
दरसन बिना बहुत दिन बीते, सुन्दर प्रीतम मोर ।।
चारि पहर चारौं जुग बीते, रैनि गँवाई भोर ।।
अवधि गई अजहूँ नहिं आए, कतहुँ रहे चित चोर ।।
कबहूँ नैन निरख नहिं देखे, मारग चितवत तोर ।।
दादू ऐसे आतुर बिरहणि, जैसे चंद चकोर ।।

[7 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सप्रसंग व्याख्या में प्रसंग, पंक्तियों का भावार्थ और काव्य-सौंदर्य स्पष्ट किए जाते हैं। इस पद में आत्मा विरहिणी और परमात्मा प्रियतम के रूप में चित्रित हैं।
- दादू की भक्ति में प्रिय के दर्शन की उत्कट लालसा है। विरह के कारण थोड़ा समय भी अत्यंत लंबा प्रतीत होता है।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग स्पष्ट करें प्रस्तुत पद संत कवि दादू दयाल का है। इसमें ईश्वर से बिछुड़ी भक्त-आत्मा की व्याकुलता व्यक्त हुई है। कवि ने आत्मा को ऐसी विरहिणी के रूप में प्रस्तुत किया है जो अपने सुंदर प्रियतम के आने की निरंतर प्रतीक्षा करती है। सांसारिक प्रेम की भाषा के माध्यम से परमात्मा से मिलन की आध्यात्मिक आकांक्षा प्रकट की गई है।

चरण 2: दर्शन के अभाव की पीड़ा समझें विरहिणी कहती है कि उसके सुंदर प्रियतम के दर्शन हुए बहुत दिन बीत गए, फिर भी उसके कठोर प्राण निकलते नहीं हैं। 'प्राण कठोर' कहने में अपने जीवित रह जाने पर उपालंभ और वियोग की असह्य वेदना है। प्रिय के बिना दिन के चार पहर चार युगों के समान लंबे लगते हैं। सारी रात प्रतीक्षा में बीत जाती है और भोर हो जाती है, किंतु दर्शन की इच्छा पूरी नहीं होती। यहाँ समय की अनुभूति घड़ी के हिसाब से नहीं, विरह की तीव्रता से व्यक्त हुई है।

चरण 3: प्रतीक्षा और अनन्य प्रेम का अर्थ खोलें प्रिय के आगमन की अपेक्षित अवधि बीत चुकी है, फिर भी वह नहीं आया। विरहिणी व्याकुल होकर पूछती है कि उसका चित्त चुराने वाला प्रिय कहाँ रह गया। उसकी आँखों ने अभी प्रिय का प्रत्यक्ष दर्शन नहीं किया है, इसलिए वह उसके आने के मार्ग को लगातार देखती रहती है। वह किसी दूसरे सहारे की ओर नहीं जाती; उसकी सारी आशा उसी प्रिय पर टिकी है। दादू कहते हैं कि उसकी आतुरता वैसी है जैसी चंद्रमा के लिए चकोर की होती है। काव्य-परंपरा में चकोर का चंद्रमा के प्रति एकनिष्ठ आकर्षण भक्त की अनन्य ईश्वर-लालसा को मूर्त करता है।

चरण 4: काव्य-सौंदर्य पहचानें पद में विरह की करुण अनुभूति के साथ भक्तिभाव प्रमुख है। 'चारि पहर चारौं जुग' में अतिशयोक्ति वियोग के समय की लंबाई को प्रभावशाली बनाती है। 'जैसे चंद चकोर' में उपमा है। 'चित चोर' प्रियतम के मन को अपने वश में कर लेने का संकेत है। सहज लोकभाषा, गेयता और 'मोर', 'भोर', 'चोर', 'तोर', 'चकोर' की तुक योजना पद की भावात्मक लय बढ़ाती है। विरहिणी का बिंब आध्यात्मिक अनुभव को साधारण मनुष्य के परिचित प्रेमानुभव से जोड़ता है।

चरण 5: निष्कर्ष पद का केंद्रीय भाव परमात्मा के दर्शन के लिए भक्त-आत्मा की अनन्य तड़प है। समय का असह्य विस्तार, मार्ग की प्रतीक्षा और चकोर की उपमा इस विरह-व्याकुलता को सजीव करते हैं।

त्वरित सुझाव: व्याख्या में 'चारि पहर', 'चित चोर' और 'चंद चकोर' का अर्थ खोलकर उन्हें क्रमशः विरह की अवधि, प्रिय के आकर्षण और अनन्य भक्ति से जोड़ें।

1(ख). निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

क्या कहते हो ? किसी तरह भी
भूलूँ और भुलाने दूँ ?
गत जीवन को तरल मेघ-सा
स्मृति-नभ में मिट जाने दूँ ?
शान्ति और सुख से ये
जीवन के दिन शेष बिताने दूँ ?
कोई निश्चित मार्ग बनाकर
चलूँ तुम्हें भी जाने दूँ ? [7 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश की सप्रसंग व्याख्या में वक्ता की मन:स्थिति, उसके प्रश्नों का निहित आशय और स्मृति से जुड़े बिंब समझना आवश्यक है।
- यहाँ बार-बार पूछे गए प्रश्न सहमति नहीं, अतीत को भुला देने के प्रस्ताव के प्रति भावात्मक अस्वीकृति प्रकट करते हैं।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग प्रस्तुत करें प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने बीते जीवन की स्मृतियों से गहरे लगाव की मन:स्थिति व्यक्त की है। वक्ता किसी आत्मीय संबोधित व्यक्ति से प्रश्न करता है कि क्या वह अपने अतीत को भुलाकर, पुराने संबंधों को छोड़कर और जीवन का निश्चित मार्ग बनाकर शेष दिन शांति से बिताने लगे। प्रसंग स्मृति और विस्मृति के बीच भावात्मक द्वंद्व का है। इन प्रश्नों में अतीत को सहजता से त्याग देने की सलाह पर आश्चर्य और उसे स्वीकार न कर पाने की व्यथा है।

चरण 2: भूलने के प्रस्ताव का आशय स्पष्ट करें 'क्या कहते हो?' कहकर वक्ता सामने वाले की बात पर अपनी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है। वह पूछता है कि क्या किसी भी प्रकार अपने अनुभवों को भूल जाए और उन्हें भुला दिए जाने भी दे। बीता जीवन उसके लिए निष्प्राण घटनाओं का ढेर नहीं है; उसमें उसके निजी अनुभव और आत्मीय भाव जुड़े हैं। इसलिए भूलना केवल एक स्मृति को हटाना नहीं, अपने जीवन के भावपूर्ण अंश से संबंध तोड़ना होगा। प्रश्नों की शैली से स्पष्ट होता है कि ऐसा त्याग उसके लिए सरल और स्वीकार्य नहीं है।

चरण 3: स्मृति-नभ और मेघ के बिंब की व्याख्या करें कवि ने स्मृति को आकाश और बीते जीवन को उसमें उपस्थित तरल मेघ के समान देखा है। जिस प्रकार बादल आकाश में छँटकर लुप्त हो सकते हैं, उसी प्रकार अतीत की छवियाँ स्मृति से मिट सकती हैं। वक्ता पूछता है कि क्या अपने जीवन को भी इसी तरह विलीन हो जाने दे। यह बिंब स्मृतियों की कोमलता तथा उनके मिट सकने की संभावना सामने लाता है, किंतु वक्ता उन्हें बचाए रखना चाहता है। 'गत जीवन' और 'स्मृति-नभ' का संबंध बताता है कि उसका अतीत वर्तमान चेतना में अब भी जीवित है।

चरण 4: अंतिम प्रश्नों और काव्य-सौंदर्य को समझें शेष जीवन को शांति और सुख से बिताने तथा कोई निश्चित मार्ग बनाकर चलने का विचार बाहरी स्थिरता का संकेत है। परंतु 'तुम्हें भी जाने दूँ?' में आत्मीय संबंध से अलग होने की पीड़ा जुड़ जाती है। इसलिए वक्ता उस सुविधा को सहज स्वीकार नहीं करता जिसकी कीमत स्मृतियों और आत्मीयता का परित्याग हो। काव्यांश में प्रश्नात्मक शैली आत्मसंवाद को नाटकीय बनाती है। 'तरल मेघ-सा' में उपमा और 'स्मृति-नभ' में रूपक है। सरल भाषा तथा लगातार आने वाले प्रश्न भावनाओं की बेचैनी और संबोधन की आत्मीयता को उभारते हैं।

चरण 5: निष्कर्ष काव्यांश में वक्ता बीते जीवन और आत्मीय संबंधों को अपनी चेतना का अभिन्न अंश मानता है। वह शांति के लिए उन्हें मिटा देने की सलाह को प्रश्नों के माध्यम से अस्वीकार करता है; यही स्मृति के प्रति उसका गहरा लगाव है।

त्वरित सुझाव: प्रत्येक प्रश्न का सीधा उत्तर देने के बजाय उसका निहित अस्वीकार पहचानें; 'स्मृति-नभ' और 'तरल मेघ' को जोड़कर अतीत के मिटने की आशंका समझाएँ।

1(ग). निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

रो दे तो पतझर आ जाए, हँस दे तो मधु ऋतु छा जाए,
झूमे तो नन्दन झूम उठे, थिरके तो ताण्डव शरमाए,
यों मदिरालय के प्याले-सी, मिट्टी की मोहक मस्ती क्या,
अधरों को छूकर सकुचाए, ठोकर लग जाए छहराए । [7 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में मिट्टी से बने मानव का भावपूर्ण, मोहक और गतिशील अस्तित्व प्रकृति के बिंबों के माध्यम से सामने आता है। व्याख्या में इन बिंबों का भावात्मक अर्थ बताना चाहिए।
- पतझर विषाद का और मधु ऋतु उल्लास का संकेत है। नंदन तथा तांडव के उल्लेख मानवीय मस्ती और गति के प्रभाव को अतिशय रूप में व्यक्त करते हैं।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग स्पष्ट करें प्रस्तुत काव्यांश में कवि ने मिट्टी के बने मानव के सौंदर्य, मस्ती और भावों की प्रभावशीलता का चित्रण किया है। देखने में साधारण मिट्टी का यह रूप रोने, हँसने, झूमने और नृत्य करने जैसी जीवंत क्रियाओं से समृद्ध है। कवि प्रकृति और पौराणिक बिंबों के द्वारा उसकी भावशक्ति का विस्तार करता है। वह ऐसी निर्बाध जीवन-मस्ती चाहता है जो प्रभावशाली हो और आघात पाकर बिखर न जाए। अंतिम पंक्तियों में मदिरालय के प्याले जैसी कमजोर मस्ती की सार्थकता पर प्रश्न इसी प्रसंग में उठाया गया है।

चरण 2: रोने और हँसने के प्रकृति-बिंब समझें कवि कहता है कि वह रो दे तो मानो पतझर आ जाए और हँस दे तो वसंत का आनंद छा जाए। रोने के साथ पतझर का संबंध उदासी, सूनेपन और सौंदर्य के क्षय से है, जबकि हँसी के साथ मधु ऋतु का संबंध प्रसन्नता, ताजगी और आकर्षण से है। इसका तात्पर्य वास्तव में ऋतु बदल जाना नहीं है। कवि बताता है कि मनुष्य की मन:स्थिति उसके अनुभव-जगत को इतना प्रभावित करती है कि दुख में संसार नीरस और आनंद में वही संसार सुंदर दिखाई देता है।

चरण 3: झूमने और थिरकने का प्रभाव स्पष्ट करें 'झूमे तो नन्दन झूम उठे' में नंदन अर्थात स्वर्ग के आनंदपूर्ण उद्यान का बिंब है। भाव यह है कि उसकी मस्ती इतनी आकर्षक है कि आनंद का आदर्श माने जाने वाला नंदनवन भी उससे आंदोलित हो उठे। 'थिरके तो ताण्डव शरमाए' में नृत्य की गति और प्रभाव की अतिशय प्रशंसा है। शिव का तांडव प्रचंड गति और ऊर्जा का प्रतीक है; उसके लज्जित होने की कल्पना मानव की जीवंतता को ऊँचाई देती है। ये कथन तथ्यात्मक तुलना के लिए नहीं, भावों के विलक्षण प्रभाव को अनुभूत कराने के लिए हैं।

चरण 4: प्याले के बिंब और काव्य-सौंदर्य की व्याख्या करें कवि प्रश्न करता है कि मिट्टी की उस मोहक मस्ती का क्या मूल्य जो मदिरालय के प्याले के समान होंठों का स्पर्श पाते ही सकुचाए अथवा ठोकर लगते ही बिखर जाए। यहाँ 'क्या' में निषेध और चुनौती निहित हैं। प्याले की भंगुरता को आदर्श नहीं बनाया गया है; उसके माध्यम से कमजोर, क्षणिक और आघात के सामने समाप्त हो जाने वाली मस्ती को अस्वीकार किया गया है। पहले वर्णित विराट प्रभाव के अनुरूप कवि साहसी, खुली और बाधाओं से न टूटने वाली जीवन-मस्ती की अपेक्षा करता है। 'प्याले-सी' में उपमा है। तांडव के शरमाने और प्याले के सकुचाने में मानवीकरण है। रोने से पतझर और हँसने से मधु ऋतु आने की कल्पना अतिशयोक्तिपूर्ण है। 'आ जाए', 'छा जाए', 'झूम उठे' तथा 'शरमाए' की लयात्मक योजना काव्यांश को गेय बनाती है।

चरण 5: निष्कर्ष कवि प्रभावशाली, मुक्त और अटूट मानवीय जीवन-मस्ती का समर्थन करता है। प्रकृति तथा नृत्य के विराट बिंब उसकी शक्ति दिखाते हैं, जबकि अंतिम प्रश्न प्याले जैसी भंगुर मस्ती को अस्वीकार करके आघात के सामने भी न टूटने की प्रेरणा देता है।

त्वरित सुझाव: पहले प्रकृति-बिंबों से मस्ती की शक्ति समझाएँ; फिर 'मस्ती क्या' का निहित निषेध पहचानकर स्पष्ट करें कि कवि ठोकर से बिखर जाने वाली मस्ती को अस्वीकार करता है।

2(क). नीचे लिखे काव्यांशों में से किन्हीं दो का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए :

"तुम हो महान
तुम सदा हो महान,"
है नश्वर यह दीनभाव
कायरता कामपरता,
ब्रह्म हो तुम पदरज भर भी है नहीं,
पूरा यह विश्वभार —
जागो फिर एक बार ।

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-सौन्दर्य में भाव-पक्ष के साथ भाषा, शैली, अलंकार और लय के प्रभाव को स्पष्ट किया जाता है।
- इस काव्यांश का केंद्रीय भाव मनुष्य में निहित महान शक्ति को जगाकर उसे दीनता, कायरता और विषयासक्ति से मुक्त करना है।

चरण 1: आत्मगौरव के संदेश को स्पष्ट कीजिए कवि मनुष्य को उसके वास्तविक स्वरूप का स्मरण कराते हुए कहता है कि वह महान है और उसकी महानता स्थायी है। इसके विपरीत दीनभाव, कायरता तथा कामपरता नश्वर दुर्बलताएँ हैं; इन्हें अपना स्वभाव मान लेना उचित नहीं। 'तुम सदा हो महान' कहकर कवि हीनता से ग्रस्त व्यक्ति के भीतर आत्मविश्वास जगाता है। यहाँ दुर्बलता के वर्णन से अधिक उसके अतिक्रमण की प्रेरणा महत्त्वपूर्ण है।

चरण 2: आध्यात्मिक भाव और उत्साह का संबंध समझाइए 'ब्रह्म हो तुम' में मनुष्य की चेतना को विराट शक्ति का रूप बताया गया है। उसकी सामर्थ्य के सामने संसार का पूरा भार भी चरणों की धूल जितना नहीं है। विश्वभार को पदरज से भी तुच्छ बताने में अतिशयोक्तिपूर्ण कथन के द्वारा मनुष्य की अपार शक्ति का बोध कराया गया है। अंतिम पुकार 'जागो फिर एक बार' निष्क्रियता छोड़कर कर्म के लिए उठ खड़े होने का आह्वान है। इस प्रकार आध्यात्मिक आत्मबोध सक्रिय जीवन की प्रेरणा बन जाता है।

चरण 3: भाषा और शिल्प का सौन्दर्य बताइए भाषा खड़ी बोली की, संस्कृतनिष्ठ तथा ओजपूर्ण है। 'नश्वर', 'ब्रह्म', 'पदरज' और 'विश्वभार' जैसे शब्द भाव को गरिमा देते हैं। 'तुम हो महान' का दोहराव संबोधित व्यक्ति की महत्ता पर बल देता है। 'ब्रह्म हो तुम' में रूपकात्मक अभिव्यक्ति है। सीधे 'तुम' कहकर संबोधन करने से कथन आत्मीय और प्रभावशाली बनता है। छोटी-बड़ी पंक्तियों वाला मुक्तछंद तथा आवाहनात्मक शैली भाव के अनुकूल गति पैदा करते हैं। उत्साह और आत्मबल की प्रधानता के कारण काव्यांश में वीर रस का स्वर उभरता है।

चरण 4: निष्कर्ष काव्यांश का सौन्दर्य मनुष्य की अंतर्निहित महानता के उद्घाटन में है। आत्मगौरव का भाव, ओजपूर्ण भाषा, रूपकात्मक अभिव्यक्ति और जागरण का सीधा आह्वान मिलकर पाठक को निर्भय कर्म की प्रेरणा देते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में 'तुम सदा हो महान' से आत्मगौरव और 'जागो' से कर्म-प्रेरणा जोड़िए; फिर किसी उद्धृत शब्द या पंक्ति के आधार पर शिल्प की विशेषता समझाइए।

2(ख). नीचे लिखे काव्यांशों में से किन्हीं दो का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए :

कीच, धूल, गंदगी बदन पर
लेकर ओ मेहनतकश !
गाता फिरे विश्व में भारत
तेरा ही नव-श्रम-यश !
तेरी एक मुस्कराहट पर
वीर पीढ़ियाँ फूलें ।
ये अनाज की पूलें
तेरे काँधे झूलें ।

[4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-सौन्दर्य बताते समय श्रम के गौरव संबंधी भाव और उन्हें मूर्त करने वाले बिंबों तथा भाषा का विवेचन आवश्यक है।
- काव्यांश में खेतों में श्रम करने वाला व्यक्ति देश के अन्न, आत्मसम्मान और आने वाली पीढ़ियों की शक्ति का आधार है।

चरण 1: श्रम की प्रतिष्ठा का भाव स्पष्ट कीजिए कवि के लिए मेहनतकश के शरीर पर लगी कीच, धूल और गंदगी उसके कठोर परिश्रम के चिह्न हैं। वे उसकी गरिमा घटाते नहीं, बल्कि उसके श्रमपूर्ण जीवन को सामने लाते हैं। कवि चाहता है कि भारत संसार में इसी श्रमिक के नए श्रम और यश का गान करे। इस इच्छा में श्रमजीवी के प्रति आदर और राष्ट्रीय उन्नति में उसकी भूमिका की स्वीकृति व्यक्त होती है। अनाज की पूलें उसके काँधे पर झूलने का दृश्य किसान के परिश्रम और उसकी उपलब्धि को एक साथ दिखाता है।

चरण 2: बिंब और भावात्मक प्रभाव समझाइए 'तेरी एक मुस्कराहट पर / वीर पीढ़ियाँ फूलें' में मेहनतकश की प्रसन्नता को भावी पीढ़ियों के विकास से जोड़ा गया है। 'फूलें' का लाक्षणिक प्रयोग समृद्ध और शक्तिशाली बनने का संकेत देता है। इस प्रकार एक व्यक्ति के श्रम का फल पूरे समाज तक पहुँचता दिखाई देता है। कीच और धूल से सना शरीर, मुस्कराता चेहरा तथा काँधे पर झूलते अनाज के गट्ठर सजीव दृश्य-बिंब बनाते हैं। इन बिंबों से श्रम की कठिनाई और फसल मिलने की खुशी दोनों का अनुभव होता है।

चरण 3: भाषा, शैली और लय की विशेषताएँ बताइए 'ओ मेहनतकश!' का सीधा संबोधन आत्मीयता और सम्मान व्यक्त करता है। 'भारत' के यश गाते फिरने की कल्पना में राष्ट्र को मानवीय क्रिया करते दिखाया गया है; यहाँ मानवीकरण का सौन्दर्य है। खड़ी बोली में 'बदन', 'मेहनतकश', 'पूलें' और 'काँधे' जैसे लोकजीवन से जुड़े शब्द भाषा को सहज बनाते हैं। 'मेहनतकश–यश' तथा 'फूलें–पूलें–झूलें' की तुकें गीतात्मक लय उत्पन्न करती हैं। छोटे वाक्य और संक्षिप्त पंक्तियाँ श्रमिक के अभिनंदन को स्मरणीय तथा गेय बनाती हैं।

चरण 4: निष्कर्ष काव्यांश में किसान के कठिन श्रम को राष्ट्रीय गौरव का आधार बताया गया है। आत्मीय संबोधन, सजीव ग्रामीण बिंब, मानवीकरण और तुकात्मक लय श्रमजीवी के सम्मान के भाव को प्रभावी बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: भाव-पक्ष में श्रम-सम्मान और नई पीढ़ियों का विकास लिखिए; शिल्प-पक्ष में काँधे पर पूलें वाले बिंब और 'फूलें–पूलें–झूलें' की लय का प्रमाण दीजिए।

2(ग). नीचे लिखे काव्यांशों में से किन्हीं दो का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए :

ऐसे आओ
जैसे गिरि के शृंग शीश पर
रंग-रूप का क्रीट लगाए
बादल आए
हंस-माल-माला लहराए
और शिला-तन —
कान्ति निकेतन-तन बन जाए । [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस काव्यांश में आगमन की सुंदरता समझाने के लिए पर्वत और बादलों का प्राकृतिक दृश्य प्रस्तुत किया गया है।
- भाव-सौन्दर्य का केंद्र ऐसा आगमन है जो कठोर और नीरस परिवेश को भी सौन्दर्य तथा प्रकाश से भर दे; उपमा, रूपक और दृश्य-बिंब इस भाव को साकार करते हैं।

चरण 1: आगमन की मंगलकारी कल्पना स्पष्ट कीजिए कवि संबोधित व्यक्ति से ऐसा आने को कहता है जैसे बादल पर्वत की चोटी पर रंग और रूप का मुकुट धारण किए आते हैं। उस समय आकाश में हंसों की माला लहराती है और कठोर शिलाओं वाला पर्वत भी कान्ति का निवास बन जाता है। यहाँ आगमन का प्रभाव केवल आने वाले तक सीमित नहीं है; उसके आने से आसपास का दृश्य भी सुंदर और आकर्षक हो उठता है। इसी प्रकार अपेक्षित आगमन जीवन में नई शोभा और उल्लास भर देने वाला होना चाहिए।

चरण 2: उपमा और रूपक का प्रभाव समझाइए 'ऐसे आओ / जैसे' में उपमा का विधान है। संबोधित व्यक्ति के आगमन की तुलना पर्वत-शिखर पर बादलों के सुंदर आगमन से की गई है। 'शृंग शीश' में पर्वत के शिखर को सिर के रूप में देखा गया है तथा 'रंग-रूप का क्रीट' में रंग और सौन्दर्य पर मुकुट का आरोप है। इससे प्राकृतिक दृश्य एक सजे हुए व्यक्तित्व की तरह साकार होता है। 'शिला-तन' और 'कान्ति निकेतन-तन' की रूपकात्मक अभिव्यक्तियाँ कठोर चट्टानी शरीर के प्रकाशमय रूप में बदल जाने का प्रभाव उत्पन्न करती हैं।

चरण 3: बिंब, भाषा और लय का विवेचन कीजिए पर्वत का ऊँचा शिखर, रंगीन बादल और लहराती हंस-पंक्ति मिलकर एक सुंदर दृश्य-बिंब बनाते हैं। 'लहराए' में गति है, इसलिए चित्र स्थिर नहीं रहता। 'शृंग शीश' में 'श' ध्वनि की आवृत्ति से अनुप्रास का सौन्दर्य है। 'लगाए–आए–लहराए–जाए' की तुकें कथन में संगीतात्मकता लाती हैं। भाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है; 'गिरि', 'शृंग', 'कान्ति' और 'निकेतन' शब्द दृश्य को गरिमा देते हैं। छोटी-बड़ी पंक्तियों और कोमल लय में व्यक्त यह प्राकृतिक कल्पना आकर्षक तथा भावपूर्ण है।

चरण 4: निष्कर्ष इस काव्यांश में सौन्दर्य और उल्लास लाने वाले आगमन की कामना है। पर्वतीय प्रकृति के सजीव बिंब, उपमा-रूपक, अनुप्रास और संगीतात्मक तुकें कठोरता के सुंदरता में रूपांतर को प्रभावशाली बनाती हैं।

त्वरित सुझाव: 'ऐसे–जैसे' से उपमा पहचानिए और 'शिला-तन' से 'कान्ति निकेतन-तन' तक के परिवर्तन को भाव-पक्ष का आधार बनाइए; हर अलंकार का पाठ से उदाहरण दीजिए।

3(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 60-60 शब्दों में दीजिए :

"काहे रे बन खोजन जाई" पद में गुरु नानक ईश्वर की अंतर्मुखी खोज पर बल क्यों देना चाहते हैं ? [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पद में ईश्वर की सर्वव्यापकता का बोध कराया गया है। बाहर व्याप्त परमात्मा मनुष्य के अपने हृदय में भी उपस्थित है।
- अंतर्मुखी खोज का अर्थ आत्मचिंतन तथा गुरु के ज्ञान से अपने भीतर विद्यमान ईश्वर को पहचानना है।

चरण 1: वन में खोजने की निरर्थकता समझिए गुरु नानक प्रश्न करते हैं कि ईश्वर को खोजने के लिए वन में जाने की क्या आवश्यकता है। यदि वह सर्वत्र समाया हुआ है, तो उसे किसी विशेष स्थान तक सीमित नहीं किया जा सकता। केवल स्थान बदलने से उस परम सत्य

की पहचान नहीं होती। साधक को अपनी चेतना की ओर लौटना होगा; पद का आग्रह बाहरी भटकाव समाप्त करके भीतर की उपस्थिति पहचानने पर है।

चरण 2: पद के उदाहरणों से भाव स्पष्ट कीजिए फूल में सुगंध और दर्पण में प्रतिबिंब के उदाहरण बताते हैं कि जिसे हम अलग खोज रहे हैं, वह निकट ही विद्यमान है। इसी प्रकार परमात्मा हमारे भीतर निरंतर रहता है। गुरु का ज्ञान भीतर और बाहर एक ही सत्ता का बोध कराता है तथा अज्ञान का भ्रम मिटाता है। इन उदाहरणों को उत्तर में जोड़ने से अंतर्मुखी खोज का कारण स्पष्ट होता है; केवल ईश्वर की महिमा लिख देना पर्याप्त नहीं है। अंतर्मुखता का आशय संसार में ईश्वर के अस्तित्व को नकारना नहीं है। भीतर और बाहर दोनों में उसी की सत्ता है; अपने अंतर्मन में उसे पहचानना बाहरी खोज के भ्रम को दूर करता है।

चरण 3: निष्कर्ष गुरु नानक अंतर्मुखी खोज पर बल देते हैं क्योंकि सर्वव्यापी ईश्वर मनुष्य के हृदय में ही विद्यमान है। उसे पाने के लिए वन में भटकना व्यर्थ है। जैसे फूल में सुगंध और दर्पण में प्रतिबिंब रहता है, वैसे ही परमात्मा भीतर रहता है। गुरु के ज्ञान तथा आत्मचिंतन से अज्ञान मिटता है और भीतर-बाहर व्याप्त एक ही ईश्वर का साक्षात्कार होता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर का क्रम रखिए: ईश्वर की सर्वव्यापकता, फूल-दर्पण के उदाहरण और गुरु के ज्ञान से भीतर उसकी पहचान।

3(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 60-60 शब्दों में दीजिए :

"आज पहली बार" कविता में हवा और कवि के जीवनानुभव एक होते हुए भी जीवन के प्रति दृष्टिकोणों में क्या भिन्नता है ? कविता के आधार पर स्पष्ट कीजिए । [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में हवा का मानवीकरण हुआ है। उसका संवाद कवि के दुख और जीवन-दृष्टि को नया अर्थ देता है।
- समान कठिन अनुभवों के प्रति अलग प्रतिक्रिया से निराशा और आशावादी सक्रियता का अंतर स्पष्ट होता है।

चरण 1: अनुभवों की समानता पहचानिए कवि और हवा दोनों पराजय, भटकाव और अकेलेपन से परिचित हैं। दोनों को सहारे का अभाव अनुभव हुआ है। इसलिए हवा कवि के दुख को समझ सकती है। तुलना लिखते समय पहले इसी साझे आधार को पहचानिए। प्रश्न केवल हवा के गुण नहीं पूछता, बल्कि समान परिस्थितियों में दोनों के दृष्टिकोणों का अंतर पूछता है।

चरण 2: प्रतिक्रियाओं का अंतर समझिए कवि अपने दुख से व्यथित और निराश है। हवा ने पराजय से शीतलता तथा भटकाव से आगे बढ़ने की प्रेरणा पाई है। अपनत्व न मिलने पर वह सबके प्रति अपनापन बाँटती है। इस प्रकार हवा का दृष्टिकोण गतिशील और उदार है। उसकी संवेदना कवि को उठने का बल देती है। कवि का दुख व्यापक मानवीय संवेदना से जुड़ने लगता है। यहाँ अनुभवों की समानता को प्रतिक्रियाओं की समानता मान लेना गलत होगा। उत्तर की योजना में पहले समान अनुभव, फिर कवि की प्रतिक्रिया, उसके बाद हवा की प्रतिक्रिया और अंत में कवि पर प्रभाव रखिए। इससे तुलना का दोनों पक्षों से निर्वाह होगा और कोई माँगा गया बिंदु छूटेगा नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष कवि और हवा दोनों ने पराजय, भटकाव तथा अकेलापन सहा है। कवि इन अनुभवों से दुखी और निराश है, जबकि हवा पराजय से शीतल और भटकाव से गतिशील हुई है। किसी का अपनत्व न मिलने पर उसने सबको अपना बनाया है। उसकी उदार, आशावादी जीवन-दृष्टि कवि को सहारा देती है और अपने दुख से ऊपर उठकर जीवन से जुड़ने की प्रेरणा देती है।

त्वरित सुझाव: पहले साझा अनुभव लिखिए; फिर कवि की निराशा के सामने हवा की शीतलता, गतिशीलता और उदारता रखकर तुलना पूरी कीजिए।

3(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 60-60 शब्दों में दीजिए :

"वीरांगना" कविता में कवि ने नारी के किन-किन रूपों को प्रस्तुत किया है, और उनकी तुलना लोहे से क्यों की है ? [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता नारी की शक्ति को लोहे के बिंब से उभारती है। तपना, गलना, ढलना और गोली की तरह चलना उसके व्यक्तित्व के विविध पक्ष हैं।
- लोहे की तुलना में दृढ़ता के साथ परिवर्तनशीलता भी महत्त्वपूर्ण है। कविता का भाव समझने के लिए प्रत्येक क्रिया का संकेत अलग पहचानना चाहिए।

चरण 1: नारी के विभिन्न रूप पहचानिए तपने में कठिनाइयों को सहने वाली नारी का रूप सामने आता है। गलने में उसकी संवेदनशीलता और परिस्थितियों का प्रभाव ग्रहण करने की क्षमता झलकती है। ढलना नए रूप तथा जिम्मेदारियाँ स्वीकार करने का संकेत देता है। गोली की तरह चलने में उसका साहसी, संघर्षशील रूप दिखाई देता है। इस प्रकार कवि केवल सहन करने वाली स्त्री नहीं, सक्रिय शक्ति भी प्रस्तुत करता है।

चरण 2: लोहे की तुलना का आधार समझिए लोहा दृढ़ होता है, किंतु ताप पाकर गलता और नए आकार में ढलता भी है। नारी भी कठिन परिस्थितियों के बीच अपनी शक्ति बनाए रखते हुए अलग-अलग भूमिकाएँ निभाती है। गोली का बिंब इस शक्ति की तीव्र, निर्णायक अभिव्यक्ति है। उत्तर में केवल नारी को कठोर कहने से तुलना अधूरी रहेगी। लोहे की सभी अवस्थाओं का क्रम बनाए रखने पर सहनशीलता, संवेदनशीलता, अनुकूलन और प्रतिरोध का संबंध स्पष्ट होगा। प्रश्न के दोनों हिस्सों को जोड़कर लिखिए: पहले नारी के रूपों का उल्लेख कीजिए, फिर उन रूपों और लोहे की विशेषताओं के बीच समानता दिखाइए।

चरण 3: निष्कर्ष कवि ने नारी को कठिनाइयों में तपने वाली, संवेदना से पिघलने वाली, विभिन्न भूमिकाओं में ढलने वाली और आवश्यकता पड़ने पर गोली जैसी तीव्र संघर्षशील शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया है। लोहे की तुलना उसकी दृढ़ता और सहनशक्ति के कारण की गई है। जैसे लोहा तपकर, गलकर और ढलकर उपयोगी रूप पाता है, वैसे ही नारी परिस्थितियों में अपनी सामर्थ्य प्रकट करती है।

त्वरित सुझाव: कविता की चार क्रियाओं को क्रम से समझिए: तपना, गलना, ढलना और चलना; प्रत्येक को नारी की संबंधित विशेषता से जोड़िए।

4(क). निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

प्राचीन भारत में चक्रवर्ती सम्राट कहलाने के लिए यहाँ के राजे अक्सर बड़ी-बड़ी लड़ाइयाँ लड़ा करते थे। मगर, इन लड़ाइयों के भीतर सिर्फ़ यही भाव नहीं था कि राजे अपना प्रभुत्व फैलाना चाहते थे। कुछ यह बात भी थी कि इस देश की भौगोलिक परिस्थिति ही सारे देश को एक देखना चाहती थी और भौगोलिक परिस्थिति की इस प्रेरणा से देश के सभी बड़े राजे इस बात के लिए उद्योग खड़ा कर देते थे कि सारा देश उनके अन्दर एक हो जाए । [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सप्रसंग व्याख्या में विचार का संदर्भ, प्रसंग, अर्थ और भाषा की विशेषताओं को स्पष्ट किया जाता है।
- इस अंश में प्राचीन राजाओं की दिग्विजय के पीछे व्यक्तिगत प्रभुत्व के साथ देश को राजनीतिक रूप से एक करने की प्रेरणा भी बताई गई है।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग स्पष्ट करें प्रस्तुत गद्यांश भारत की एकता के ऐतिहासिक और भौगोलिक आधार पर विचार करता है। प्रसंग प्राचीन भारतीय राजाओं के चक्रवर्ती सम्राट बनने के प्रयत्नों का है। लेखक इस धारणा को अधूरा मानता है कि उनके युद्धों का उद्देश्य केवल अपना अधिकार बढ़ाना था। वह देश को एक शासन के अंतर्गत लाने की इच्छा का संबंध उसकी भौगोलिक परिस्थिति से जोड़ता है।

चरण 2: राजाओं के युद्धों के दोनों उद्देश्य समझाएँ प्राचीन भारत में अनेक राजा अपना राज्य बढ़ाकर चक्रवर्ती सम्राट की प्रतिष्ठा प्राप्त करना चाहते थे। इस पद का अभिप्राय ऐसे शक्तिशाली सम्राट से है जिसका अधिकार विस्तृत भूभाग पर स्वीकार किया जाए। इस

आकांक्षा को पूरा करने के लिए वे बड़े युद्ध करते थे। लेखक उनके प्रभुत्व-विस्तार की इच्छा से इनकार नहीं करता; "सिर्फ़ यही भाव नहीं था" कहकर स्पष्ट करता है कि युद्धों के पीछे एक और प्रेरणा भी काम कर रही थी। इसलिए इन संघर्षों को केवल व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा का परिणाम मानना उनके प्रयोजन की एकांगी व्याख्या होगी।

चरण 3: भौगोलिक एकता की प्रेरणा का अर्थ बताएँ लेखक के अनुसार भारत की भौगोलिक परिस्थिति देश को एक इकाई के रूप में देखने की प्रेरणा देती थी। अलग-अलग राज्यों में विभाजित होते हुए भी पूरे देश को एक राजनीतिक व्यवस्था में संगठित करने की संभावना विद्यमान थी। बड़े राजा इसी प्रेरणा से प्रयास करते थे कि देश उनके शासन के अंतर्गत एक हो जाए। "उद्योग खड़ा कर देते थे" का अर्थ यहाँ संगठित प्रयास करना है, किसी कारखाने की स्थापना करना नहीं। इस प्रकार अंश में भूगोल और इतिहास का संबंध स्थापित करते हुए राजनीतिक एकीकरण की आकांक्षा को रेखांकित किया गया है।

चरण 4: भाषा और अभिव्यक्ति की विशेषताएँ बताएँ भाषा सरल, स्पष्ट और विचारप्रधान है। "मगर" तथा "कुछ यह बात भी थी" जैसे प्रयोग विचार को क्रमशः आगे बढ़ाते हैं। "भौगोलिक परिस्थिति ही सारे देश को एक देखना चाहती थी" में भौगोलिक परिस्थिति को मानवीय इच्छा से युक्त बताया गया है; इससे एकता की प्रेरणा प्रभावशाली बनती है। ऐतिहासिक उदाहरण के माध्यम से लेखक अपना तर्क समझाता है और राजाओं की महत्त्वाकांक्षा के साथ एकीकरण की प्रवृत्ति को जोड़ता है।

चरण 5: निष्कर्ष गद्यांश का आशय है कि प्राचीन राजाओं के युद्धों में प्रभुत्व बढ़ाने की इच्छा के साथ भारत को एक शासन के अंतर्गत संगठित करने की प्रेरणा भी थी। लेखक इस दूसरी प्रेरणा का आधार देश की भौगोलिक परिस्थिति में देखता है।

त्वरित सुझाव: "सिर्फ़ यही भाव नहीं था" को व्याख्या का आधार बनाएँ; प्रभुत्व-विस्तार और देश के एकीकरण, दोनों उद्देश्यों को स्पष्ट लिखें।

4(ख). निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

जीवन के समान उसकी मृत्यु भी दैन्य से रहित थी। 'कुत्ते की मौत मरना' कहावत है, परन्तु यदि नीलू के समान शान्त, निर्लिप्त भाव से कोई मृत्यु का सामना कर सके, तो ऐसी मृत्यु मनुष्य को भी काम्य होगी। मेरे पास अनेक जीव-जन्तु हैं, परन्तु जिसके बुरा माने जाने की मुझे चिन्ता हो, ऐसा अब कोई नहीं है। [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संस्मरणात्मक गद्य में किसी जीव के व्यवहार और उसके प्रति लेखक की अनुभूतियों के माध्यम से उसके व्यक्तित्व को उभारा जाता है।
- नीलू की शांत मृत्यु उसके स्वाभिमानी जीवन के अनुरूप है। अंतिम वाक्य लेखिका और उसके बीच गहरे भावात्मक संबंध को व्यक्त करता है।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग प्रस्तुत करें यह अंश महादेवी वर्मा के "नीलू" संबंधी संस्मरण से है। लेखिका अपने प्रिय कुत्ते नीलू की मृत्यु का स्मरण करते हुए उसके स्वाभिमान और अपने जीवन में उसके विशेष स्थान को व्यक्त करती हैं। प्रसंग नीलू के जीवन की गरिमा, मृत्यु के समय उसकी शांति और उसके चले जाने से उत्पन्न आत्मीय रिक्तता का है।

चरण 2: दैन्यरहित जीवन और मृत्यु का अर्थ समझाएँ "दैन्य" का अर्थ दीनता या असहाय याचना का भाव है। लेखिका कहती हैं कि नीलू ने जैसे अपना जीवन बिना दीनता के बिताया, वैसे ही मृत्यु को भी बिना दयनीयता के स्वीकार किया। उसकी मृत्यु में घबराहट या विवशता का प्रदर्शन नहीं था। "शान्त, निर्लिप्त भाव" से आशय मृत्यु के सम्मुख संयत और आसक्ति से मुक्त रहने से है। इससे नीलू का व्यक्तित्व केवल एक पालतू पशु का नहीं, गरिमा और आत्मसंयम रखने वाले आत्मीय साथी का बनकर सामने आता है।

चरण 3: प्रचलित कहावत के उलट आशय को स्पष्ट करें "कुत्ते की मौत मरना" कहावत सामान्यतः अत्यंत दयनीय या अपमानजनक मृत्यु के अर्थ में प्रयुक्त होती है। लेखिका नीलू की मृत्यु को देखकर इस प्रचलित धारणा को उलट देती हैं। नीलू ने जिस धैर्य और निर्लिप्तता से मृत्यु का सामना किया, वैसी मृत्यु मनुष्य के लिए भी वांछनीय हो सकती है। "काम्य" का अर्थ इच्छा करने योग्य है। लेखिका का उद्देश्य मृत्यु की इच्छा करना नहीं, मृत्यु का सामना करने की गरिमामय वृत्ति की प्रशंसा करना है। इस तुलना से पशु के प्रति तिरस्कारपूर्ण मान्यता के स्थान पर सम्मान और संवेदना स्थापित होती है।

चरण 4: अंतिम वाक्य और भाषा की विशेषता बताएँ लेखिका के पास दूसरे जीव-जंतु अब भी हैं, किंतु नीलू जैसा कोई नहीं है जिसके नाराज़ होने का उन्हें ध्यान रखना पड़े। "बुरा माने जाने की मुझे चिन्ता" वाक्य उसकी संवेदनशीलता और लेखिका के साथ उसके आत्मीय संबंध को प्रकट करता है। वे उसकी भावनाओं का सम्मान करती थीं। इसलिए उसकी अनुपस्थिति केवल संख्या में एक पशु की कमी नहीं, एक विशिष्ट संबंध की अपूरणीय रिक्तता है। भाषा सरल, आत्मीय और करुण भाव से युक्त है। कहावत का उलट प्रयोग, जीवन और मृत्यु की तुलना तथा अंतिम वाक्य की मार्मिकता अंश को प्रभावशाली बनाते हैं।

चरण 5: निष्कर्ष नीलू का स्वाभिमान जीवन और मृत्यु दोनों में सुरक्षित रहा। उसकी शांत मृत्यु मानव के लिए भी अनुकरणीय धैर्य का उदाहरण बनती है, जबकि उसकी अनुपस्थिति लेखिका के मन में गहरे आत्मीय संबंध की रिक्तता छोड़ जाती है।

त्वरित सुझाव: व्याख्या में "दैन्य", "निर्लिप्त" और "काम्य" के अर्थ खोलें तथा अंतिम वाक्य को नीलू के प्रति लेखिका के भावनात्मक सम्मान से जोड़ें।

4(ग). निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

हे कलाकार, तुम तो जानते हो, राजनीति में केवल दो ही वर्ण होते हैं : एक सफ़ेद, एक काला। सफ़ेद अपने काले पर पोतने के लिए, काला औरों के सफ़ेद पर पोतने के लिए। कला-नीति में ऐसा नहीं होता। वहाँ तो वर्ण नहीं, रंग होते हैं; विविध रंग। कला-नीति में तो काला भी उतना ही सुन्दर है जितना कोई और रंग। काला राजनीति में कौआ है तो कला-नीति में कोकिल। [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यंग्यात्मक तुलना में प्रतीकों के सहारे किसी प्रवृत्ति की आलोचना की जाती है। यहाँ सफ़ेद और काला राजनीतिक व्यवहार के प्रतीक हैं।
- कला विविध रंगों में सौंदर्य देखती है; वह किसी रंग को पक्ष या विरोध के आधार पर श्रेष्ठ अथवा हीन नहीं मानती।

चरण 1: संदर्भ और प्रसंग स्पष्ट करें प्रस्तुत गद्यांश राजनीति और कला की दृष्टियों के अंतर को स्पष्ट करने वाले संवाद का अंश है। वक्ता कलाकार को संबोधित करके बताता है कि स्वार्थपूर्ण राजनीतिक व्यवहार में रंगों का प्रयोग अपनी छवि सँवारने और दूसरों की छवि बिगाड़ने के लिए होता है। इसके विपरीत कला में विविध रंग अपने सौंदर्य और अभिव्यक्ति की क्षमता के कारण महत्त्वपूर्ण होते हैं। प्रसंग इसी अंतर को सफ़ेद और काले रंग के उदाहरण से समझाने का है।

चरण 2: राजनीति के सफ़ेद और काले का प्रतीकार्थ बताएँ राजनीति में केवल दो वर्ण होने की बात शाब्दिक तथ्य नहीं, व्यंग्यपूर्ण कथन है। यहाँ सफ़ेद अच्छाई, निर्दोषता और उजली छवि का प्रतीक है, जबकि काला दोष और कलंक का। अपने काले पर सफ़ेद पोतने का अर्थ है अपने दोष छिपाकर स्वयं को अच्छा सिद्ध करना। दूसरों के सफ़ेद पर काला पोतने का अर्थ है उनके गुणों को भी बदनाम करना या उनकी स्वच्छ छवि को दूषित करना। इस प्रकार वक्ता ऐसी राजनीतिक प्रवृत्ति पर प्रहार करता है जो सत्य और गुण के निष्पक्ष मूल्यांकन के स्थान पर अपने पक्ष का बचाव और विरोधी की निंदा करती है।

चरण 3: कला की व्यापक दृष्टि समझाएँ कला में रंग केवल अच्छा-बुरा ठहराने के साधन नहीं हैं। विविध रंग मिलकर अनुभूतियों और सौंदर्य की अनेक संभावनाएँ उत्पन्न करते हैं। काला रंग भी प्रसंग, संयोजन और अभिव्यक्ति के अनुसार उतना ही सुंदर हो सकता है जितना कोई दूसरा रंग। इसलिए कला की दृष्टि विविधता को स्वीकार करने वाली और सौंदर्यपरक है। "वर्ण नहीं, रंग होते हैं" कहकर वक्ता राजनीतिक खानों में बाँटने की संकुचित दृष्टि और कला के विविधतापूर्ण संसार का अंतर उभारता है।

चरण 4: कौए और कोकिल की तुलना तथा शैली स्पष्ट करें कौआ और कोकिल दोनों काले होते हैं, किंतु कोकिल की मधुरता के कारण उसका सौंदर्य और आकर्षण स्वीकार किया जाता है। राजनीति में काले को कौआ कहना उसके नकारात्मक उपयोग की ओर संकेत करता है; कला में उसी काले को कोकिल कहना उसके भीतर भी सौंदर्य देखने की क्षमता को बताता है। यह तुलना वास्तविक पक्षियों का मूल्यांकन करने के लिए नहीं, दोनों दृष्टियों का भेद दिखाने के लिए है। "हे कलाकार" संबोधन से संवादात्मकता आती है। सफ़ेद-काले की विरोधात्मक योजना, पोतने की क्रिया तथा कौआ-कोकिल का प्रतीकात्मक प्रयोग भाषा को व्यंग्यपूर्ण, चित्रात्मक और प्रभावशाली बनाते हैं।

चरण 5: निष्कर्ष अंश में स्वार्थपूर्ण राजनीति की दोष छिपाने और दूसरों को बदनाम करने की प्रवृत्ति पर व्यंग्य है। कला की विशेषता यह है कि वह विविधता स्वीकार करती है और काले जैसे रंग में भी सौंदर्य की संभावनाएँ पहचानती है।

त्वरित सुझाव: सफ़ेद-काले को पहले गुण-दोष की राजनीतिक छवि से जोड़ें, फिर कौआ-कोकिल की तुलना से कला की सौंदर्यदृष्टि का अंतर समझाएँ।

5(क). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 60-60 शब्दों में दीजिए।

'एक था पेड़ और एक था ठूँठ' पाठ के आधार पर लिखिए कि लेखक ने दृढ़ और अड़ियल में क्या अंतर किया है ? [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में पेड़ और ठूँठ के माध्यम से विवेकपूर्ण दृढ़ता तथा जड़ हठ का अंतर समझाया गया है।
- मनुष्य को आदर्शों पर अटल रहते हुए व्यवहार में परिस्थिति के अनुसार लचीलापन अपनाना चाहिए।

चरण 1: दोनों स्वभावों का आधार पहचानिए दृढ़ व्यक्ति सत्य और उचित बात का साथ देता है। उसका न झुकना किसी नैतिक आधार से जुड़ा होता है। इसके विपरीत अड़ियल व्यक्ति अपनी बात पर इसलिए टिका रहता है कि वह झुकना ही नहीं चाहता। वह यह नहीं परखता कि उसका आग्रह उचित है या अनुचित। इस प्रकार बाहर से समान दिखाई देने वाला अटलपन भीतर से अलग है।

चरण 2: पेड़ और ठूँठ के संकेत समझिए जीवित पेड़ की जड़ स्थिर रहती है, किंतु उसकी शाखाएँ हवा के साथ झुकती हैं। इसी तरह सिद्धांतों में स्थिरता और व्यवहार में समन्वय साथ चल सकते हैं। ठूँठ में झुकने की क्षमता नहीं होती। उसका अकड़कर खड़े रहना जीवन का गुण नहीं, निर्जीवता है। यहाँ झुकना कायरता नहीं है, क्योंकि इससे मूल आदर्श नहीं छूटते। उसी प्रकार हर स्थिति में अड़े रहना साहस नहीं है, क्योंकि उसमें सही निर्णय का अभाव हो सकता है। लेखक का आग्रह जीवन को बचाने वाली समझदारी पर है। उत्तर में इन्हीं प्रतीकों से अंतर स्पष्ट करना पर्याप्त है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर लिखिए लेखक के अनुसार दृढ़ व्यक्ति सत्य और औचित्य के लिए अटल रहता है, किंतु सामान्य व्यवहार में परिस्थितियों से समन्वय करता है। अड़ियल व्यक्ति उचित-अनुचित और समय-असमय का विचार किए बिना अपनी जिद पर अड़ा रहता है। पेड़ की स्थिर जड़ और लचीली शाखाएँ जीवंत दृढ़ता दिखाती हैं, जबकि ठूँठ का अकड़ापन निर्जीव जड़ता है। इसलिए दृढ़ बनना चाहिए, अड़ियल नहीं।

चरण 4: निष्कर्ष दृढ़ता विवेक और सत्य पर आधारित है; अड़ियलपन में विवेकहीन हठ प्रधान होता है।

त्वरित सुझाव: अंतर बताते समय आधार, व्यवहार और प्रतीक जोड़िए: सत्य तथा लचीलापन पेड़ से, अंधी जिद ठूँठ से संबंधित हैं।

5(ख). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 60-60 शब्दों में दीजिए।

'तत्सत्' शब्द का आशय स्पष्ट करते हुए कहानी के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रतीकात्मक कहानी में वन समग्र सत्ता का और उसके अलग-अलग घटक व्यक्तिगत अस्तित्व का संकेत हैं।
- शीर्षक का अर्थ कहानी के केंद्रीय विचार और अंत में प्राप्त अनुभूति से स्पष्ट होता है।

चरण 1: शब्द का अभिप्राय समझिए 'तत्सत्' में 'तत्' का आशय वह और 'सत्' का आशय सत्य अथवा वास्तविक अस्तित्व है। इस प्रकार इसका भाव है कि वह समग्र सत्ता ही सत्य है। कहानी की व्याख्या में केवल शब्द का अनुवाद पर्याप्त नहीं; यह भी बताना चाहिए कि वन के सभी घटक जिस व्यापक अस्तित्व में जुड़े हैं, वही उनकी वास्तविकता का आधार है।

चरण 2: कथा के अंत से संबंध जोड़िए वन के निवासी अपने अलग-अलग नाम और रूप को ही सब कुछ मानते हैं। इसलिए वे वन को अपने से बाहर किसी जीव की तरह खोजते हैं। बड़ दादा को अंत में समग्रता का बोध होता है। उनकी अनुभूति 'हम नहीं, वह है' में प्रकट होती है। यहाँ लेखक संकीर्ण अहंभाव से ऊपर उठने का संकेत देते हैं। शीर्षक किसी एक पात्र का नाम रखने के स्थान पर इसी केंद्रीय अनुभूति को सामने लाता है। यह संक्षिप्त है, पर पूरी कहानी को एक अर्थ देता है। उत्तर में अनावश्यक घटनाक्रम लिखने के बजाय अर्थ, कथा-संदर्भ और सार्थकता का क्रम रखना चाहिए।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर लिखिए 'तत्सत्' का अर्थ है वह सत्य है। कहानी में वन समग्र सत्ता का प्रतीक है। वनवासी अपने पृथक अस्तित्व के अहंकार में वन को नहीं पहचानते। अंत में बड़ दादा समझते हैं कि सब उसी व्यापक सत्ता के अंग हैं। व्यक्तियों की अलग पहचान से ऊपर समष्टि की इस सत्यता का बोध ही कहानी का संदेश है; इसलिए शीर्षक सार्थक है।

चरण 4: निष्कर्ष 'तत्सत्' शीर्षक समग्र सत्य की पहचान और व्यक्तिगत अहंकार के अतिक्रमण को अभिव्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: शीर्षक की सार्थकता में पहले उसका अर्थ लिखिए, फिर वन के प्रतीक और बड़ दादा की अंतिम अनुभूति से उसे जोड़िए।

5(ग). नीचे लिखे प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 60-60 शब्दों में दीजिए।

शताब्दियों से भारतीय संस्कृति की प्रवहमान धारा की क्या विशेषताएँ थीं जिन्हे हमने धीरे-धीरे सूख जाने दिया है ? 'मेरे लिए भारतीय होने का अर्थ' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निर्मल वर्मा भारतीयता को भूगोल के साथ सांस्कृतिक स्मृति और आध्यात्मिक एकता से जोड़ते हैं।
- प्रश्न संस्कृति की विशेषताएँ पूछता है; उत्तर में पाठ के समावेश और विविध विश्वासों के सम्मान वाले विचार स्पष्ट करने हैं।

चरण 1: सांस्कृतिक धारा की विशेषताएँ पहचानिए पाठ में संस्कृति की व्यापकता प्रमुख है। अनेक जातियों, जनजातियों और धार्मिक समुदायों को अपने विश्वासों के साथ जीने का स्थान मिलता था। अलग विश्वास रखने वाला व्यक्ति केवल सहन करने की वस्तु नहीं था। उसके विश्वास में भी सत्य की संभावना स्वीकारी जाती थी। इसी दृष्टि से विविधता के भीतर एक साझा सांस्कृतिक आधार संभव हुआ।

चरण 2: प्रतीकों और प्रश्न के आशय को जोड़िए नर्मदा की अनेक धाराएँ और वटवृक्ष की विस्तृत छाया इस बहुलता को समझने में सहायक हैं। आध्यात्मिक आधार विभिन्न प्रभावों को ग्रहण करने की शक्ति देता था। प्रश्न में धारा का सूखना इन्हीं उदार प्रवृत्तियों के क्षीण होने का संकेत है। उत्तर लिखते समय केवल सामान्य प्रशंसा न करें। जातियों और समुदायों की स्वतंत्रता, अलग विश्वासों के प्रति आदर तथा बाहरी प्रभावों को स्वीकार करने की क्षमता का उल्लेख करें। इससे पाठ के विशिष्ट विचार सामने आते हैं। लगभग 60 शब्दों के उत्तर में इन बिंदुओं को एक क्रम में पिरोना चाहिए, ताकि एक ही विशेषता बार-बार न दोहराई जाए और सभी अपेक्षित पक्ष समा जाएँ।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर लिखिए भारतीय संस्कृति की प्रवहमान धारा उदार, समावेशी और आध्यात्मिक थी। उसने अनेक जातियों, जनजातियों तथा धार्मिक समुदायों को स्वतंत्र जीवन का स्थान दिया। विभिन्न आस्थाओं में सत्य की समान उपस्थिति स्वीकार करना उसकी विशेषता थी। अपने आध्यात्मिक आधार के कारण उसने विविध प्रभाव आत्मसात किए। हमने इस उदारता और सहअस्तित्व को उपेक्षित करके धीरे-धीरे उस सांस्कृतिक धारा को सूखने दिया है।

चरण 4: निष्कर्ष सांस्कृतिक धारा की विशेषताएँ बहुलता का आदर, स्वतंत्र सहअस्तित्व और विविध प्रभावों को आत्मसात करने वाली आध्यात्मिक एकता थीं।

त्वरित सुझाव: नर्मदा की अनेक धाराओं और वटवृक्ष की छाया को याद करके विविधता, आश्रय और समावेश के तीन मुख्य विचार लिखिए।

6. भगवतीशरण सिंह के जीवन, रचनाओं और भाषा-शैली का संक्षिप्त परिचय दीजिए। [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेखक-परिचय में जीवन की प्रमुख घटनाएँ, प्रतिनिधि रचनाएँ तथा भाषा-शैली की विशिष्टताएँ अलग-अलग स्पष्ट की जाती हैं।
- भगवतीशरण सिंह के साहित्य में प्रकृति, संस्कृति और मानव-जीवन के प्रति आत्मीय दृष्टि दिखाई देती है।

चरण 1: जीवन का परिचय दीजिए भगवतीशरण सिंह का जन्म 1919 में हुआ। उनकी शिक्षा वाराणसी और प्रयाग में हुई। भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेने के कारण उनका अंग्रेज़ी साहित्य का उच्च अध्ययन बीच में छूट गया। बाद में उन्होंने विधि की शिक्षा पूरी की और कुछ समय वकालत की। वे प्रशासनिक सेवा से भी जुड़े रहे। काशी के साहित्यिक और सांस्कृतिक वातावरण से उनका घनिष्ठ संबंध था। सार्वजनिक जीवन और विभिन्न क्षेत्रों के अनुभवों ने उनकी साहित्यिक दृष्टि को व्यापक बनाया।

चरण 2: प्रमुख रचनाएँ बताइए उनकी प्रमुख कृतियों में 'मानव के मूल में' तथा 'एक और फेरा है जी का' ललित निबंधों से संबंधित हैं। 'अपराजिता' उनका कहानी-संग्रह है। 'भाषा की शिक्षा' और 'साहित्य : पहचान और पहुँच' निबंधात्मक कृतियाँ हैं। 'जंगल और जानवर', 'वन पाहुन' तथा 'रस गगन गुफा में' उनके प्रकृति और संस्कृति संबंधी लेखन का परिचय देती हैं। इन रचनाओं में वन्य जीवन के निरीक्षण के साथ मानव की संवेदना और सांस्कृतिक अनुभवों की अभिव्यक्ति मिलती है।

चरण 3: भाषा और शैली स्पष्ट कीजिए उनकी भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और साहित्यिक खड़ी बोली है। प्रसंग के अनुसार संस्कृत के शब्दों के साथ सामान्य बोलचाल के शब्दों का भी स्वाभाविक प्रयोग होता है। प्रकृति का वर्णन करते समय भाषा चित्रात्मक और भावपूर्ण हो उठती है। उनकी शैली में वर्णन, विचार और आत्मीय संस्मरण का मेल है। ललित निबंधों में संवेदना के साथ चिंतन जुड़ा रहता है; इसीलिए विवरण केवल बाहरी दृश्य का परिचय न देकर उससे जुड़े मानवीय अनुभव को भी सामने लाता है।

चरण 4: निष्कर्ष भगवतीशरण सिंह प्रकृति और संस्कृति के संवेदनशील गद्यकार हैं। विविध जीवनानुभव, आत्मीय वर्णन और सहज साहित्यिक भाषा उनके लेखन की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

त्वरित सुझाव: परिचय को जीवन, रचनाएँ और भाषा-शैली के क्रम में लिखिए; 'अपराजिता' को कहानी-संग्रह तथा 'वन पाहुन' को प्रकृति संबंधी कृति के रूप में याद रखिए।

अथवा

6. जैनेन्द्र कुमार के जीवन, रचनाओं और भाषा-शैली का संक्षिप्त परिचय दीजिए। [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- साहित्यकार का परिचय उसके जीवन, प्रमुख कृतियों और अभिव्यक्ति की विशेषताओं को जोड़कर दिया जाता है।
- जैनेन्द्र कुमार मनुष्य के अंतर्मन, नैतिक प्रश्नों और संबंधों की जटिलता का चित्रण करने वाले प्रमुख कथाकार और निबंधकार हैं।

चरण 1: जीवन का परिचय दीजिए जैनेन्द्र कुमार का जन्म 1905 में उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जनपद में हुआ। वे हिंदी के प्रसिद्ध उपन्यासकार, कहानीकार और चिंतक थे। राष्ट्रीय आंदोलन तथा गांधीजी के विचारों का उनके व्यक्तित्व और चिंतन पर प्रभाव पड़ा। उन्होंने सामाजिक समस्याओं को व्यक्ति की चेतना और नैतिक दायित्व से जोड़कर देखा। हिंदी कथा-साहित्य को मनोवैज्ञानिक गहराई देने में उनका विशेष योगदान है। उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार, भारत-भारती सम्मान तथा पद्मभूषण से सम्मानित किया गया। उनका निधन 1988 में हुआ।

चरण 2: प्रतिनिधि रचनाएँ लिखिए उनके प्रमुख उपन्यास 'परख', 'सुनीता', 'त्यागपत्र', 'कल्याणी', 'जयवर्धन', 'मुक्तिबोध' और 'अनाम स्वामी' हैं। 'खेल', 'पाजेब', 'अपना-अपना भाग्य' और 'तत्सत' उनकी उल्लेखनीय कहानियाँ हैं। 'प्रस्तुत प्रश्न', 'जड़ की बात', 'साहित्य का श्रेय और प्रेय' तथा 'सोच-विचार' में उनका चिंतनशील निबंधकार रूप सामने आता है। उपन्यासों और कहानियों में उन्होंने पात्रों की आंतरिक उलझनों और संबंधों को सूक्ष्मता से प्रस्तुत किया है।

चरण 3: भाषा-शैली की विशेषताएँ समझाइए जैनेन्द्र की भाषा सहज, सजीव और प्रायः बोलचाल के निकट है। छोटे वाक्यों, प्रश्नों और संवादों के माध्यम से वे पाठक को विचार में सहभागी बनाते हैं। सामान्य अनुभव से किसी गंभीर नैतिक या दार्शनिक प्रश्न तक पहुँचना उनकी शैली की विशेषता है। कथा-साहित्य में उनकी शैली मनोविश्लेषणात्मक है; बाहरी घटनाओं के साथ पात्रों के मन में चलने वाले द्वंद्व को विशेष महत्त्व मिलता है। निबंधों में विचारात्मकता, तर्क और आत्मीय बातचीत का स्वर दिखाई देता है। सरल दिखाई देने वाली अभिव्यक्ति में अर्थ की गहराई बनी रहती है।

चरण 4: निष्कर्ष जैनेन्द्र कुमार हिंदी के प्रमुख मनोवैज्ञानिक कथाकार और मौलिक चिंतक हैं। उनकी रचनाओं की पहचान अंतर्मन का सूक्ष्म चित्रण, नैतिक प्रश्नों पर विचार और सहज किंतु अर्थगर्भित भाषा है।

त्वरित सुझाव: जैनेन्द्र के परिचय में 'त्यागपत्र' और 'पाजेब' के साथ मनोवैज्ञानिक दृष्टि का उल्लेख अवश्य कीजिए; केवल रचनाओं की सूची से भाषा-शैली का भाग पूरा नहीं होता।

7(क). 'विविधा भाग-2' के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर लगभग 40-40 शब्दों में दीजिए :

'माँ जानती है' कहानी के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि 'अरुमुगम' की मृत्यु पर उसकी माँ को यह क्यों नहीं समझ आ पा रहा था कि वह रोए या प्रसन्न हो। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी में माँ की मनःस्थिति समझने के लिए पुत्र-वियोग के निजी दुःख और उसके वीरतापूर्ण बलिदान के गौरव को साथ देखना आवश्यक है।
- एक ही घटना से विपरीत भाव उठ सकते हैं; यहाँ ममता का शोक और वीर पुत्र की माँ होने का गर्व साथ उपस्थित हैं।

चरण 1: रोने का कारण समझिए अरुमुगम की मृत्यु माँ के लिए अपने प्रिय पुत्र को सदा के लिए खो देना थी। पुत्र की वीरता और उसे मिलने वाला सम्मान इस व्यक्तिगत क्षति को समाप्त नहीं कर सकते थे। माँ का स्नेह उसे जीवित देखना चाहता था; इसलिए उसके मन में शोक का उठना स्वाभाविक था। उत्तर में इस पक्ष को केवल सामान्य दुःख कहकर छोड़ने के बजाय पुत्र-वियोग से जोड़ना चाहिए।

चरण 2: प्रसन्नता और दुविधा का कारण स्पष्ट कीजिए दूसरी ओर अरुमुगम का बलिदान वीरतापूर्ण था और उसकी वीरता के लिए उसे वीर चक्र का सम्मान मिला। अपने पुत्र के साहस और गौरव से माँ का मन गर्वित होता था। यही गर्व उसके शोक के साथ टकराता है। प्रसन्नता का कारण मृत्यु स्वयं नहीं, बल्कि पुत्र का यश और उसका वीरतापूर्ण कार्य है। इस अंतर से स्पष्ट होता है कि माँ न अपने दुःख को भुला पा रही थी और न पुत्र के गौरव को।

चरण 3: निष्कर्ष अरुमुगम की मृत्यु से माँ पुत्र-वियोग में दुखी थी; दूसरी ओर उसके वीरतापूर्ण बलिदान और वीर चक्र के सम्मान से गर्वित थी। ममता का शोक और पुत्र की वीरता का गौरव एक साथ उमड़ने से वह रोने और प्रसन्न होने की दुविधा में थी।

त्वरित सुझाव: उत्तर में दो कारण साथ रखिए: पुत्र खोने का शोक और उसके वीरतापूर्ण बलिदान का गर्व; प्रसन्नता को मृत्यु से नहीं, पुत्र के गौरव से जोड़िए।

7(ख). 'विविधा भाग-2' के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर लगभग 40-40 शब्दों में दीजिए :

पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर के व्यक्तित्व की किन्हीं तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यक्तित्व की विशेषता को व्यक्ति के आचरण और कार्य से स्पष्ट किया जाता है। केवल प्रसिद्ध संगीतज्ञ कहना उसके स्वभाव का पर्याप्त परिचय नहीं देता।

- पलुस्कर के जीवन में संगीत-साधना, कलाकार का स्वाभिमान तथा संगीत-शिक्षा का लोकहितकारी प्रसार परस्पर जुड़े हुए हैं।

चरण 1: साधना और संकल्प को पहचानना पलुस्कर कर्मठ और दृढ़निश्चयी साधक थे। संगीत सीखने तथा उसका प्रचार करने के लिए उन्होंने कठिन अभ्यास और परिश्रम किया। बाधाओं के कारण अपने उद्देश्य को छोड़ देने के स्थान पर वे उसके लिए निरंतर प्रयत्न करते रहे। इससे उनकी लगन तथा संकल्प की दृढ़ता स्पष्ट होती है। उन्होंने कला की साधना को अपने जीवन का प्रमुख उद्देश्य बनाया।

चरण 2: स्वाभिमान और लोकसेवा को स्पष्ट करना उनमें अपनी कला की गरिमा के प्रति गहरा स्वाभिमान था। वे संगीत और संगीतकार को सम्मानजनक स्थान दिलाना चाहते थे। साथ ही, उनकी दृष्टि केवल निजी यश पर केंद्रित नहीं थी। गांधर्व महाविद्यालय द्वारा व्यवस्थित संगीत-शिक्षा का प्रसार उनके लोकहित तथा संगठन-कौशल का प्रमाण है। उत्तर में इन कार्यों को संबंधित गुण से जोड़ना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष पलुस्कर दृढ़निश्चयी और परिश्रमी संगीत-साधक थे। वे स्वाभिमानी थे तथा संगीत और कलाकार की प्रतिष्ठा के लिए प्रयत्नशील रहे। वे उदार लोकसेवी भी थे; गांधर्व महाविद्यालय के माध्यम से उन्होंने संगीत-शिक्षा को व्यापक समाज तक पहुँचाने का कार्य किया।

त्वरित सुझाव: तीन गुण अलग रखें: दृढ़ साधना, स्वाभिमान और लोकसेवा; प्रत्येक को उनके कार्य से जोड़ें।

7(ग). 'विविधा भाग-2' के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर लगभग 40-40 शब्दों में दीजिए :

'प्रेरक प्रसंग' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि फ़ौजी के प्रति टण्डन जी का व्यवहार पाठकों को क्या प्रेरणा देता है। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रेरक प्रसंग में व्यक्ति के निर्णय से मिलने वाली शिक्षा उसके वास्तविक आचरण से निकाली जाती है। यहाँ प्रशासनिक कर्तव्य और प्रभावशाली लोगों के प्रति निष्पक्षता मुख्य हैं।
- नियम का पालन सबके लिए समान होना चाहिए। पद, शक्ति या दबाव किसी को सार्वजनिक दायित्व से मुक्त नहीं करते।

चरण 1: जलकर के विवाद का प्रसंग समझना फौजी नगर पालिका को पानी का कर नहीं दे रहे थे। बकाया माँगे जाने पर छावनी के अधिकारियों ने विरोध किया। टण्डन जी के सामने प्रश्न था कि प्रभावशाली पक्ष के दबाव में नगर पालिका के अधिकार और सार्वजनिक हित तथा नागरिक समानता को छोड़ दिया जाए या नियमों का पालन दृढ़ता से कराया जाए।

चरण 2: व्यवहार से मिलने वाली प्रेरणा बताना टण्डन जी ने भयभीत होकर अनुचित छूट देने के स्थान पर अपने कर्तव्य का निर्वाह किया। उनका व्यवहार सिखाता है कि अधिकार का प्रयोग निजी लाभ या पक्षपात के लिए नहीं होना चाहिए। न्याय के पक्ष में खड़े रहने के लिए साहस और आत्मविश्वास चाहिए। पाठ की प्रेरणा को फौजी के अपमान या व्यक्तिगत विरोध के रूप में नहीं, सबके प्रति समान न्याय के रूप में समझना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष फौजी के प्रति टण्डन जी का व्यवहार निर्भीकता, कर्तव्यनिष्ठा और न्यायप्रियता की प्रेरणा देता है। सार्वजनिक नियम सब पर समान रूप से लागू होने चाहिए। किसी प्रभावशाली व्यक्ति के दबाव में आए बिना अपने दायित्व और जनहित की रक्षा करनी चाहिए।

त्वरित सुझाव: जलकर का प्रसंग याद रखें और उससे निर्भीकता, समान न्याय तथा कर्तव्यनिष्ठा की प्रेरणा निकालें।

7(घ). 'विविधा भाग-2' के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन के उत्तर लगभग 40-40 शब्दों में दीजिए :

'सत्यकिरण' एकांकी के खगेश की दृष्टि में प्रसिद्ध साहित्यकार बनने के लिए क्या गुण आवश्यक हैं ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- खगेश के कथन साहित्यिक जगत के पाखंड पर व्यंग्य हैं। यहाँ गुण शब्द से उसके द्वारा अपनाई गई स्वार्थपूर्ण चालाकियाँ समझनी चाहिए।
- उत्तर में खगेश की दृष्टि और सच्ची साहित्य-साधना का अंतर स्पष्ट रहना चाहिए। उसकी प्रसिद्धि मौलिक प्रतिभा की विश्वसनीय कसौटी नहीं है।

चरण 1: रचनाएँ तैयार करने की चाल समझना खगेश स्वीकार करता है कि वह दूसरे से लिखवाकर अपने नाम से कविता छपवाता है। पुरानी पांडुलिपियों और पत्र-पत्रिकाओं की अलग-अलग पंक्तियाँ जोड़कर भी नई रचना बना लेता है। वह इसी जोड़-तोड़ को अपनी मौलिकता बताता है। इससे उसकी साहित्यिक चोरी और अवसरवादी बुद्धि प्रकट होती है।

चरण 2: संपर्क और प्रचार की भूमिका पहचानना वह चतुराई और चाटुकारिता से संपादकों से संबंध बनाता है। उनसे अपनी प्रशंसा में लेख लिखवाकर प्रसिद्धि अर्जित करता है। प्रभावशाली प्रकाशक से संबंध भी उसके काम आता है। अतः उसकी दृष्टि में स्वार्थ साधने की क्षमता, दूसरों की रचनाओं का उपयोग और प्रशंसा का प्रचार ही ख्याति प्राप्त करने के साधन हैं। इस दृष्टिकोण का वर्णन करते हुए उसकी नैतिक स्वीकृति नहीं देनी चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष खगेश की दृष्टि में चतुराई, चाटुकारिता और स्वार्थबुद्धि आवश्यक हैं। दूसरे की रचनाएँ अपने नाम से छपवाना, पुरानी पंक्तियाँ जोड़ना, संपादकों-प्रकाशकों से संबंध बनाना तथा अपनी प्रशंसा करवाना प्रसिद्धि के उपाय हैं। उसके कथन साहित्यिक पाखंड पर व्यंग्य करते हैं।

त्वरित सुझाव: खगेश के गुण व्यंग्यात्मक हैं: रचनाओं की चोरी, संपादकों की चापलूसी और अपना प्रचार मुख्य रखें।

8(क). प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 30-30 शब्दों में दीजिए :

"आप जो पुराना इतिहास सुनाते हैं काका, तो क्या युद्ध रेशम की डोरियों और कपास की पौनियों से हुआ करते थे ?" रानी लक्ष्मीबाई उपन्यास में यह वाक्य किसने, किसको, किन परिस्थितियों में कहा है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग-आधारित उत्तर में वक्ता, श्रोता और तत्कालीन परिस्थिति तीनों स्पष्ट करने होते हैं।
- मनु का साहस उसके बाल्यकाल के संवाद में प्रकट होता है। यहाँ काका संबोधन उसके पिता मोरोपंत के लिए है।

चरण 1: वक्ता और श्रोता पहचानना यह कथन मनु ने अपने पिता मोरोपंत से कहा था। मनु ही आगे चलकर रानी लक्ष्मीबाई के नाम से प्रसिद्ध हुई। वह मोरोपंत को काका कहकर संबोधित करती थी; अतः इस संबोधन से किसी दूसरे संबंधी का अनुमान नहीं लगाना चाहिए।

चरण 2: घटना का संदर्भ देना घुड़सवारी करते हुए नाना साहब गिरकर घायल हो गए थे। मनु उन्हें अपने घोड़े पर बैठाकर वापस लाई। बड़े लोग चोट और रक्तस्राव से चिंतित थे। जब मोरोपंत ने चोट को गंभीर बताया, तब मनु ने पुराने वीरों और युद्धों का उदाहरण देकर इतनी घबराहट पर प्रश्न उठाया।

चरण 3: निष्कर्ष यह कथन मनु ने अपने पिता मोरोपंत से कहा। घुड़सवारी में घायल नाना साहब की चोट पर उनकी चिंता देखकर मनु ने युद्धों का उदाहरण देकर निर्भीकता जताई।

त्वरित सुझाव: उत्तर का क्रम रखें: मनु, पिता मोरोपंत, फिर घुड़सवारी में नाना साहब के घायल होने का प्रसंग।

8(ख). प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 30-30 शब्दों में दीजिए :

"झाँसी को असली राजा तो अब मिला" — जूही के इस कथन के अभिप्राय को स्पष्ट कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी पात्र की टिप्पणी का अभिप्राय समझते समय उस अवसर की घटना तथा शब्दों के लाक्षणिक अर्थ को जोड़ना चाहिए।
- यहाँ असली राजा से आशय शासक-सुलभ निर्भीकता, आत्मविश्वास और दृढ़ व्यक्तित्व से है।

चरण 1: विवाह का प्रसंग समझना विवाह के समय वृद्ध पुरोहित के हाथ काँप रहे थे और गठबंधन कसने में देर हो रही थी। मनु ने दृढ़ स्वर में गाँठ ऐसी बाँधने को कहा कि वह कभी छूटे नहीं। उसकी इस निर्भीक बात की चर्चा बाहर तक पहुँची। जूही की टिप्पणी इसी प्रसंग से जुड़ी है।

चरण 2: असली राजा का आशय स्पष्ट करना जूही को मनु में साहस, दृढ़ता और प्रभावशाली व्यक्तित्व दिखाई दिया। वह मनु को केवल राजा की पत्नी के रूप में नहीं देखती, बल्कि उसमें राज्य का नेतृत्व करने की क्षमता पहचानती है। इसलिए उसका कथन लक्ष्मीबाई के तेज और नेतृत्व-योग्यता की प्रशंसा है।

चरण 3: निष्कर्ष जूही का आशय था कि निर्भीक और दृढ़ मनु के रूप में झाँसी को योग्य नेतृत्व मिला। विवाह में मनु की स्पष्टवादिता देखकर उसने लक्ष्मीबाई को असली राजा कहा।

त्वरित सुझाव: जूही की टिप्पणी को विवाह के गठबंधन वाले प्रसंग से जोड़ें; असली राजा का लाक्षणिक अर्थ समझाएँ।

---

9. लक्ष्मीबाई की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र-चित्रण में पात्र के स्वभाव, विचार और कार्यों से प्रकट गुणों का विवेचन किया जाता है।
- लक्ष्मीबाई के चरित्र में देशप्रेम, स्वाभिमान, वीरता, दूरदर्शिता और प्रजावत्सलता का समन्वय है।

चरण 1: देशप्रेम और स्वाभिमान को समझिए लक्ष्मीबाई अपने राज्य और देश की स्वतंत्रता को सर्वोपरि मानती हैं। अंग्रेजों की राज्य हड़पने की नीति का विरोध उनके आत्मसम्मान और स्वतंत्रता-प्रेम का प्रमाण है। वे अन्यायपूर्ण अधीनता स्वीकार करके सुविधापूर्ण जीवन बिताना नहीं चाहतीं। पति की मृत्यु और राज्य पर आए संकट के सामने भी उनका मनोबल नहीं टूटता। अधिकारों की रक्षा का उनका संकल्प धीरे-धीरे व्यापक स्वाधीनता-संघर्ष से जुड़ जाता है।

चरण 2: वीरता और नेतृत्व को स्पष्ट कीजिए लक्ष्मीबाई साहसी, युद्धकुशल और कर्मठ हैं। घुड़सवारी और शस्त्र-संचालन में उनकी दक्षता युद्ध के समय उपयोगी सिद्ध होती है। वे केवल आदेश देने वाली शासिका नहीं, स्वयं संकट का सामना करने वाली सेनानायिका हैं। झाँसी की रक्षा के लिए सेना की तैयारी, सैनिकों का उत्साहवर्धन और प्रतिकूल परिस्थितियों में संघर्ष जारी रखना उनकी संगठन-शक्ति और दृढ़ निश्चय को प्रकट करता है। स्त्रियों को भी संघर्ष के योग्य बनाना उनके प्रगतिशील दृष्टिकोण का परिचायक है।

चरण 3: मानवीयता और विवेक को पहचानिए रानी अपनी प्रजा के सुख-दुःख के प्रति संवेदनशील हैं। उनके लिए शासन का अर्थ केवल राजसी अधिकार नहीं, जनता की रक्षा का दायित्व भी है। वे जाति और धर्म के संकुचित भेदों से ऊपर उठकर योग्य व्यक्तियों को साथ लेती हैं। सैनिकों और सहयोगियों के प्रति उनका अपनत्व उन्हें जनप्रिय बनाता है। साहस के साथ उनमें परिस्थिति को समझने और तैयारी पर बल देने की व्यावहारिक बुद्धि भी है। उनका त्याग और अंतिम समय तक किया गया संघर्ष कर्तव्यनिष्ठा का सर्वोच्च उदाहरण है।

चरण 4: निष्कर्ष लक्ष्मीबाई देशभक्त, स्वाभिमानी, वीर, दृढ़निश्चयी, कुशल नेत्री और प्रजावत्सल शासिका हैं। उनके चरित्र में व्यक्तिगत साहस, मानवीय करुणा तथा स्वतंत्रता के लिए सर्वस्व त्यागने का आदर्श एक साथ दिखाई देता है।

त्वरित सुझाव: लक्ष्मीबाई के प्रत्येक गुण के साथ उससे जुड़ा कार्य लिखिए; जैसे वीरता के साथ युद्ध-नेतृत्व और प्रजावत्सलता के साथ जनता की रक्षा का दायित्व।

अथवा

9. नाना साहब की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। [4 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसी ऐतिहासिक उपन्यास के पात्र का मूल्यांकन उसके उद्देश्य, व्यवहार, नेतृत्व और सीमाओं के आधार पर किया जाता है।
- नाना साहब के चरित्र में स्वाभिमान, अंग्रेज-विरोध, राजनीतिक महत्त्वाकांक्षा और संगठन की इच्छा के साथ राजसी जीवन का आकर्षण भी दिखाई देता है।

चरण 1: स्वाभिमान और अंग्रेज-विरोध का आधार बताइए नाना साहब पेशवा बाजीराव के दत्तक पुत्र हैं और अपनी प्रतिष्ठा तथा अधिकारों के प्रति सजग हैं। अंग्रेजों द्वारा उनके उत्तराधिकार और पेंशन के दावे को अस्वीकार करना उनके लिए अपमानजनक है। इस अन्याय से अंग्रेजी शासन के प्रति उनका विरोध दृढ़ होता है। वे पराधीनता से मुक्ति और देशी सत्ता की पुनः प्रतिष्ठा चाहते हैं। उनके व्यक्तित्व में देशप्रेम के साथ अपने वंश के गौरव और राजनीतिक अधिकारों को लौटाने की आकांक्षा भी जुड़ी हुई है।

चरण 2: नेतृत्व और संगठन की भावना स्पष्ट कीजिए नाना साहब अंग्रेजी सत्ता के विरोध में सहयोगियों को एकत्र करने का प्रयत्न करते हैं। तात्या टोपे और अजीमुल्ला खाँ जैसे सहयोगियों से उनका संबंध उनके राजनीतिक प्रयत्नों को बल देता है। वे समझते हैं कि अंग्रेजों का सामना संगठित शक्ति से ही किया जा सकता है। विद्रोह में उनकी सक्रिय भूमिका उनके साहस और संघर्ष की इच्छा को प्रकट करती है। उनका व्यक्तित्व लोगों को एक साझा उद्देश्य की ओर आकर्षित करने की क्षमता रखता है।

चरण 3: चरित्र की सीमाओं का संतुलित विवेचन कीजिए नाना साहब में राजसी वैभव और भोग-विलास का आकर्षण भी है। उनके उत्साह और महत्त्वाकांक्षा के अनुपात में निरंतर अनुशासित तैयारी तथा व्यावहारिक दूरदर्शिता का अभाव दिखाई देता है। केवल पुरानी प्रतिष्ठा लौटाने की इच्छा कठिन राजनीतिक संघर्ष की सफलता के लिए पर्याप्त नहीं होती। लक्ष्मीबाई की सतत कर्मशीलता और युद्ध-सज्जा की तुलना में उनका यह पक्ष दुर्बल पड़ता है। इसलिए उनका चरित्र केवल गुणों का आदर्श रूप नहीं, बल्कि मानवीय दुर्बलताओं वाला प्रभावशाली ऐतिहासिक व्यक्तित्व है।

चरण 4: निष्कर्ष नाना साहब स्वाभिमानी, अंग्रेज-विरोधी, साहसी और महत्त्वाकांक्षी नेता हैं। उनमें संगठन की भावना है, किंतु राजसी वैभव का मोह तथा दृढ़, दूरदर्शी कार्ययोजना की कमी उनके नेतृत्व की सीमाएँ हैं।

त्वरित सुझाव: नाना साहब के उत्तर में स्वाभिमान और संगठन-भावना के साथ उनकी सीमाएँ भी लिखिए; चरित्र-चित्रण को केवल जीवन-वृत्त या प्रशंसा की सूची न बनाइए।

10(क). किन्हीं दो में सन्धि-विच्छेद कीजिए : औषधालय, बहिष्कार, ब्रजेश । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संधि-विच्छेद में संयुक्त शब्द को उसके मूल पदों में अलग करते हैं और बदली हुई ध्वनियों का मूल रूप लौटाते हैं।
- स्वर-संधि में स्वरों का मेल तथा विसर्ग-संधि में विसर्ग का परिवर्तन पहचानना आवश्यक है।

चरण 1: स्वर-संधि वाले शब्द अलग कीजिए औषधालय का विच्छेद औषध + आलय है। यहाँ अ और आ के मिलने से आ बनता है; यह दीर्घ स्वर-संधि है। ब्रजेश का विच्छेद ब्रज + ईश है। यहाँ अ और ई के मिलने से ए बनता है; यह गुण स्वर-संधि है। विच्छेद करते समय संयुक्त स्वर के स्थान पर दोनों मूल स्वर लौटाए गए हैं।

चरण 2: विसर्ग का मूल रूप पहचानिए बहिष्कार का विच्छेद बहिः + कार है। यहाँ इ के बाद के विसर्ग का क के पहले ष् में परिवर्तन होता है। इसलिए मूल पद बहिः है, बहिष् नहीं।

चरण 3: निष्कर्ष औषधालय = औषध + आलय; बहिष्कार = बहिः + कार; ब्रजेश = ब्रज + ईश।

त्वरित सुझाव: औषधालय में आ, ब्रजेश में ए और बहिष्कार में ष् को देखकर क्रमशः दीर्घ, गुण और विसर्ग-संधि का मूल रूप पहचानिए।

10(ख). किन्हीं दो में सन्धि कीजिए : मद + उन्मत्त, तत् + मय, प्रति + आगमन । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संधि में पास-पास आने वाली ध्वनियाँ नियमानुसार बदलकर संयुक्त शब्द बनाती हैं।
- यहाँ गुण-संधि, व्यंजन-संधि और यण-संधि के नियम अलग-अलग लागू होंगे।

चरण 1: स्वरों का मेल कीजिए मद + उन्मत्त में मद का अंतिम अ और उन्मत्त का आरंभिक उ मिलकर ओ बनते हैं। गुण-संधि से मदोन्मत्त शब्द बनता है। प्रति + आगमन में इ के बाद भिन्न स्वर आ आने पर इ का य् हो जाता है। इस यण-संधि से प्रत्यागमन बनता है; यहाँ इ और आ को अलग-अलग बनाए नहीं रखते।

चरण 2: व्यंजन का परिवर्तन कीजिए तत् + मय में त् के बाद अनुनासिक म् आया है। त् अपने वर्ग के अनुनासिक न् में बदल जाता है। अतः संयुक्त शब्द तन्मय बनता है। यह व्यंजन-संधि है।

चरण 3: निष्कर्ष मद + उन्मत्त = मदोन्मत्त; तत् + मय = तन्मय; प्रति + आगमन = प्रत्यागमन।

त्वरित सुझाव: पहले मिलन-स्थान की ध्वनियाँ देखिए: अ और उ से ओ, त् और म् से न्म तथा इ के बाद आ आने पर य् का परिवर्तन पहचानिए।

10(ग). किन्हीं दो पदों का समास-विग्रह कर समास का नाम भी बताइए : हवनसामग्री, यथासमय, मुख्यमंत्री । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समास-विग्रह में समस्त पद के दोनों शब्दों का अर्थ-संबंध स्पष्ट किया जाता है और लुप्त विभक्ति या सहायक शब्द लौटाए जाते हैं।
- अव्ययीभाव में अव्यय की प्रधानता, तत्पुरुष में परपद की प्रधानता और कर्मधारय में विशेषण-विशेष्य का संबंध पहचाना जाता है।

चरण 1: प्रयोजन का संबंध पहचानिए हवनसामग्री का विग्रह है: हवन के लिए सामग्री। सामग्री का प्रयोजन हवन करना है। समस्त पद में "के लिए" का लोप हुआ है और सामग्री पद प्रधान है। इसलिए यह संप्रदान तत्पुरुष अथवा चतुर्थी तत्पुरुष समास है। केवल दोनों शब्दों को अलग लिखना पूरा विग्रह नहीं होगा; उनके बीच का प्रयोजन-संबंध भी बताना होगा।

चरण 2: अव्यय-प्रधान पद पहचानिए यथासमय का विग्रह है: समय के अनुसार। इसमें यथा अव्यय है और पूरा पद किसी कार्य के समयानुकूल होने का अर्थ देता है। अतः यह अव्ययीभाव समास है। इसका अर्थ "यथा और समय" नहीं होता, इसलिए इसे द्वंद्व समास नहीं कहेंगे।

चरण 3: विशेषण और विशेष्य का संबंध देखिए मुख्यमंत्री का विग्रह है: मुख्य है जो मंत्री, अथवा मुख्य मंत्री। यहाँ मुख्य शब्द मंत्री की विशेषता बता रहा है। दोनों पद एक ही व्यक्ति का बोध कराते हैं; मुख्य विशेषण और मंत्री विशेष्य है। इसलिए यह कर्मधारय समास है।

चरण 4: निष्कर्ष हवनसामग्री: हवन के लिए सामग्री, संप्रदान तत्पुरुष; यथासमय: समय के अनुसार, अव्ययीभाव; मुख्यमंत्री: मुख्य है जो मंत्री, कर्मधारय समास।

त्वरित सुझाव: "के लिए" से संप्रदान तत्पुरुष, "यथा" से अव्ययीभाव और "मुख्य है जो मंत्री" के विशेषण-विशेष्य संबंध से कर्मधारय पहचानिए।

11(क). नीचे लिखे वाक्यों में से किन्हीं दो के शुद्ध रूप लिखिए :

(i) कृपया मेरी सहायता करने की कृपा करें।

(ii) तुम तुम्हारे गाँव लौट जाओ।

(iii) अपनी बात सविस्तारपूर्वक सुनाइए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वाक्य-शुद्धि में अनावश्यक पुनरुक्ति हटाकर मूल अर्थ और विनम्रता को बनाए रखा जाता है।
- कर्ता से संबंधित स्वत्व के लिए निजवाचक सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है; समान अर्थ वाले क्रियाविशेषणों को एक साथ नहीं जोड़ा जाता।

चरण 1: पहले वाक्य की पुनरुक्ति पहचानिए पहले वाक्य में कृपया और कृपा करें दोनों विनम्र निवेदन व्यक्त करते हैं। दोनों का एक साथ प्रयोग अनावश्यक है। कृपया को रखते हुए अंत में करें कहना पर्याप्त है। इससे सहायता करने का आग्रह भी बना रहता है और भाषा संक्षिप्त तथा शुद्ध हो जाती है।

चरण 2: दूसरे वाक्य में सर्वनाम सुधारिए दूसरे वाक्य का कर्ता तुम है और गाँव का संबंध उसी कर्ता से है। ऐसे स्थान पर तुम्हारे के बदले अपने का प्रयोग उचित है। गाँव लौटने का निर्देश यथावत रहता है; केवल निजवाचक सर्वनाम का सही रूप लगाया जाता है।

चरण 3: तीसरे वाक्य का अनावश्यक अंश हटाइए सविस्तार का अर्थ ही विस्तार के साथ है। उसमें पूर्वक जोड़ने से एक ही भाव दोहराया जाता है। इसलिए सविस्तार पर्याप्त है। इसी अर्थ को विस्तारपूर्वक शब्द से भी व्यक्त किया जा सकता है; इन दोनों रूपों को मिलाना उचित नहीं है।

चरण 4: निष्कर्ष (i) कृपया मेरी सहायता करें।

(ii) तुम अपने गाँव लौट जाओ।

(iii) अपनी बात सविस्तार सुनाइए।

त्वरित सुझाव: कृपया के साथ कृपा करें और सविस्तार के साथ पूर्वक को दोहराने से बचें; कर्ता के अपने संबंध के लिए अपना का सही रूप चुनें।

11(ख). नीचे लिखे वाक्य में यथास्थान सही विराम-चिह्न लगाइए :

पर्यटक ने पूछा क्या इस वन में हाथी बाघ आदि जंगली जानवर रहते हैं [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रत्यक्ष कथन को वक्ता के परिचय से अलग करने के लिए अल्पविराम और कथन को घेरने के लिए उद्धरण-चिह्न लगाए जाते हैं।
- प्रश्नवाचक कथन के अंत में प्रश्नवाचक चिह्न और सूची के अलग-अलग पदों के बीच अल्पविराम आता है।

चरण 1: प्रत्यक्ष प्रश्न की सीमा पहचानिए पर्यटक ने पूछा कथन का परिचय है। पर्यटक के वास्तविक शब्द क्या से आरंभ होते हैं और रहते हैं पर समाप्त होते हैं। इसलिए पूछा के बाद अल्पविराम लगाकर प्रश्न को दोहरे उद्धरण-चिह्नों में रखा जाएगा। इससे स्पष्ट होगा कि आगे लिखे शब्द पर्यटक ने स्वयं कहे हैं।

चरण 2: सूची और वाक्यांत के चिह्न लगाइए हाथी और बाघ जंगली जानवरों के उदाहरण हैं, इसलिए हाथी के बाद अल्पविराम लगाया जाएगा। बाघ के बाद आदि से सूची आगे बढ़ने का संकेत मिलता है, अतः वहाँ अतिरिक्त चिह्न आवश्यक नहीं है। पूरा प्रत्यक्ष कथन जानकारी माँगने वाला प्रश्न है; उसका प्रश्नवाचक चिह्न समापन उद्धरण-चिह्न के भीतर आएगा। प्रश्न के बाद अलग से पूर्णविराम लगाने की आवश्यकता नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष पर्यटक ने पूछा, “क्या इस वन में हाथी, बाघ आदि जंगली जानवर रहते हैं?”

त्वरित सुझाव: पहले वक्ता और उसके बोले हुए शब्द अलग करें; फिर सूची में अल्पविराम और पूछे गए प्रश्न के अंत में उद्धरण के भीतर प्रश्नवाचक चिह्न लगाएँ।

12. प्रस्तुत अनुच्छेद को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

प्रत्येक क्रियाशीलता आचरण नहीं कहलाती। उठना, बैठना, भोजन करना आदि क्रियाएँ आचरण नहीं है। वास्तव में वह क्रियाशीलता आचरण कहलाती है जिसका सम्बन्ध दूसरे व्यक्ति से होता है। यदि किसी क्रिया से दूसरा व्यक्ति अनुकूल या प्रतिकूल रूप से प्रभावित होता है तो वह क्रिया आचरण बन जाएगी। जैसे किसी व्यक्ति की दुखद अवस्था पर यदि कोई हँसता है तो वह हँसना आचरण बन जाएगा। वैसे सामान्य रूप से हँसना केवल एक क्रिया है। यदि समस्त क्रियाओं को आचरण माना जाए तो पशु और प्रकृति के कार्यों को भी आचरण का विषय मानना होगा और इस प्रकार एक अव्यवस्था हो जाएगी। इसलिए आचरण का सम्बन्ध मूलतः मनुष्य से ही है; क्योंकि वह आत्मचेतन होकर कार्य करता है। [4 अंक]

12(क). उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए। [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक गद्यांश के केंद्रीय विचार को संक्षेप में व्यक्त करता है।
- यह गद्यांश साधारण क्रिया और आचरण में अंतर तथा आचरण का मनुष्य से संबंध स्पष्ट करता है।

चरण 1: केंद्रीय विषय पहचानिए गद्यांश का आरंभ इस कथन से होता है कि प्रत्येक क्रियाशीलता आचरण नहीं कहलाती। आगे दूसरे व्यक्ति पर प्रभाव डालने वाली क्रिया को आचरण बताया गया है। इसलिए उसका केंद्रीय विषय आचरण का स्वरूप है।

चरण 2: समूचे विचार को समेटिए हँसना, उठना और बैठना मुख्य विषय नहीं, क्रिया और आचरण का अंतर समझाने वाले उदाहरण हैं। उपयुक्त शीर्षक ऐसा होना चाहिए जो परिभाषा, दूसरों पर प्रभाव और मनुष्य की आत्मचेतना को एक व्यापक विषय के अंतर्गत रखे।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक है: आचरण का स्वरूप।

त्वरित सुझाव: शीर्षक चुनते समय हँसने जैसे एक उदाहरण पर न रुकें; आरंभ से अंत तक बार-बार आने वाले केंद्रीय विचार को चुनें।

12(ख). आचरण किस क्रिया को कहते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- बोध प्रश्न का उत्तर गद्यांश में दी गई परिभाषा के आधार पर दिया जाता है।
- किसी क्रिया का दूसरे व्यक्ति से संबंध और उस पर पड़ने वाला प्रभाव उसे आचरण बनाता है।

चरण 1: परिभाषा का निर्णायक अंश खोजिए लेखक उस क्रियाशीलता को आचरण कहता है जिसका संबंध दूसरे व्यक्ति से होता है। अतः केवल किसी व्यक्ति का सक्रिय होना पर्याप्त नहीं है; दूसरे व्यक्ति से जुड़ाव आवश्यक है।

चरण 2: प्रभाव की शर्त स्पष्ट कीजिए गद्यांश के अनुसार प्रभाव अनुकूल भी हो सकता है और प्रतिकूल भी। इसलिए आचरण केवल अच्छे व्यवहार का नाम नहीं है। किसी दुखी व्यक्ति पर हँसना भी उसके प्रति प्रतिकूल प्रभाव के कारण आचरण माना गया है।

चरण 3: निष्कर्ष जिस क्रिया से दूसरा व्यक्ति अनुकूल या प्रतिकूल रूप से प्रभावित होता है, उसे आचरण कहते हैं।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में दूसरे व्यक्ति पर प्रभाव की शर्त अवश्य लिखें; केवल अच्छा व्यवहार लिखने से गद्यांश का पूरा अर्थ नहीं आता।

12(ग). समस्त क्रियाओं को आचरण क्यों नहीं कहा जा सकता ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश सामान्य क्रियाओं और आचरण की सीमा अलग करता है।
- आचरण का विचार आत्मचेतन मनुष्य और उसकी क्रिया के दूसरे व्यक्ति पर प्रभाव से जुड़ा है।

चरण 1: सामान्य क्रिया का भेद समझिए उठना, बैठना और भोजन करना जैसी प्रत्येक क्रिया दूसरे व्यक्ति को अनुकूल या प्रतिकूल रूप से प्रभावित करने वाली नहीं होती। इसलिए गद्यांश इन क्रियाओं को अपने-आप आचरण नहीं मानता।

चरण 2: सभी क्रियाओं को शामिल करने का परिणाम बताइए यदि हर क्रिया आचरण कहलाए, तो पशुओं और प्रकृति के कार्य भी उसके अंतर्गत आ जाएँगे। गद्यांश के अनुसार इससे आचरण की अवधारणा में अव्यवस्था पैदा होगी और उसका विशिष्ट मानवीय आधार स्पष्ट नहीं रह सकेगा।

चरण 3: निष्कर्ष समस्त क्रियाओं को आचरण कहने से पशुओं और प्रकृति के कार्य भी आचरण माने जाएँगे और अव्यवस्था उत्पन्न होगी; इसलिए सभी क्रियाएँ आचरण नहीं हैं।

त्वरित सुझाव: इस क्यों वाले प्रश्न में सभी क्रियाओं को आचरण मानने का परिणाम लिखें: पशु और प्रकृति के कार्यों का अनुचित समावेश।

12(घ). आचरण का सम्बन्ध मनुष्य से ही क्यों है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कारण पूछने वाले प्रश्न का उत्तर गद्यांश में व्यक्त कारण से दिया जाता है।
- आत्मचेतना से आशय अपने कार्य के प्रति सजग होकर कार्य करना है।

चरण 1: गद्यांश का स्पष्ट कारण पहचानिए अंतिम वाक्य में लेखक कहता है कि आचरण का संबंध मूलतः मनुष्य से है, क्योंकि वह आत्मचेतन होकर कार्य करता है। यहाँ क्योंकि के बाद आया विचार ही पूछे गए संबंध का सीधा कारण है।

चरण 2: कारण का आशय समझिए मनुष्य अपने कार्य के प्रति सजग होकर कार्य करता है। यह आत्मचेतना उसके व्यवहार को केवल प्राकृतिक या पशु-जगत की क्रियाओं से अलग आधार देती है। उत्तर में इसी विशेषता को केंद्र में रखना चाहिए, बाहरी उदाहरण या असंबंधित गुण जोड़ना आवश्यक नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष आचरण का संबंध मनुष्य से ही है, क्योंकि मनुष्य आत्मचेतन होकर अर्थात् अपने कार्य के प्रति सजग होकर कार्य करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर का कारण अंतिम वाक्य में क्योंकि के बाद है; आत्मचेतना को सामान्य सक्रियता का पर्याय न बनाएँ।

13. समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं और दूरदर्शन में प्रदर्शित अश्लील विज्ञापनों की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए किसी प्रतिष्ठित दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादक को लिखा गया पत्र सार्वजनिक समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करने और जनमत जागृत करने का माध्यम है।

- औपचारिक पत्र में प्रेषक का पता, तिथि, प्राप्तकर्ता, विषय, संबोधन, व्यवस्थित विवरण और विनम्र समापन आवश्यक हैं।
- विषय की आलोचना संयत भाषा में करते हुए सुधार के व्यावहारिक उपाय प्रस्तुत किए जाते हैं।

चरण 1: पत्र का प्रारूप तय कीजिए प्रेषक का पता और तिथि लिखकर पत्र किसी प्रतिष्ठित दैनिक के संपादक को संबोधित करेंगे। विषय-पंक्ति में अश्लील विज्ञापनों का उल्लेख होगा। संबोधन महोदय तथा समापन भवदीय और नाम से करेंगे।

चरण 2: समस्या और सुझाव व्यवस्थित कीजिए अशोभनीय भाषा और दृश्यों की समस्या, बच्चों पर प्रभाव तथा पारिवारिक असुविधा बताएँगे। सामग्री की पूर्व समीक्षा, शालीन प्रस्तुति और शिकायतों पर कार्रवाई सुझाएँगे। संपादक से जनजागरण का आग्रह करेंगे।

चरण 3: पूरा आदर्श पत्र लिखिए 25, शांति नगर

नई दिल्ली

15 मार्च, 2004

सेवा में,

संपादक महोदय

दैनिक नवभारत टाइम्स

नई दिल्ली

विषय: अश्लील विज्ञापनों के प्रकाशन और प्रसारण पर रोक लगाने के संबंध में।

महोदय,

आपके प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के माध्यम से मैं समाचार-पत्रों, पत्रिकाओं और दूरदर्शन में प्रदर्शित अश्लील विज्ञापनों की ओर संबंधित संस्थाओं तथा समाज का ध्यान आकृष्ट करना चाहता हूँ। विज्ञापन उपभोक्ताओं को वस्तुओं और सेवाओं की जानकारी देने का उपयोगी साधन हैं, किंतु कुछ विज्ञापनों में उत्पाद की विशेषताओं के स्थान पर अशोभनीय दृश्य और द्विअर्थी भाषा को प्रमुखता दी जाती है।

ऐसे विज्ञापन बच्चों और किशोरों पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकते हैं। परिवार के साथ समाचार-पत्र पढ़ते या दूरदर्शन देखते समय भी असहज स्थिति उत्पन्न होती है। किसी व्यक्ति, विशेषकर महिला, को केवल आकर्षण की वस्तु के रूप में प्रस्तुत करना उसकी गरिमा के विरुद्ध है। व्यावसायिक लाभ के लिए सामाजिक उत्तरदायित्व की उपेक्षा उचित नहीं है।

अत: प्रकाशकों, विज्ञापन एजेंसियों और प्रसारण संस्थाओं को सामग्री की पूर्व समीक्षा करनी चाहिए। विज्ञापन में उत्पाद की उपयोगिता, गुणवत्ता तथा आवश्यक जानकारी को शालीन ढंग से प्रस्तुत किया जाए। दर्शकों और पाठकों की शिकायतें सुनने की व्यवस्था भी प्रभावी हो तथा आपत्तिजनक विज्ञापनों को शीघ्र हटाया जाए।

कृपया इस विषय पर संपादकीय प्रकाशित करके जनजागरण करें और संबंधित संस्थाओं को जिम्मेदार विज्ञापन-प्रस्तुति के लिए प्रेरित करें।

धन्यवाद।

भवदीय

अमित कुमार

चरण 4: निष्कर्ष पत्र में अश्लील विज्ञापनों के प्रभाव और सुधार के उपाय बताकर संपादक से जनजागरण का आग्रह किया गया है।

त्वरित सुझाव: संपादक को केवल शिकायत न लिखें; प्रभाव और व्यावहारिक उपाय बताकर समाचार-पत्र के माध्यम से जागरूकता फैलाने का स्पष्ट अनुरोध करें।

अथवा

13. आपके क्षेत्र में भीषण बाढ़ के कारण मची तबाही और राहत कार्यों की अपर्याप्तता की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए अपने राज्य के मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर तुरंत क़दम उठाने का अनुरोध कीजिए। [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शिकायत और अनुरोध संबंधी औपचारिक पत्र में समस्या, उसके प्रभाव, सहायता की कमी और अपेक्षित कार्रवाई स्पष्ट रूप में लिखी जाती है।
- मुख्यमंत्री को संबोधित पत्र की भाषा विनम्र, तथ्यपरक और जनहित पर केंद्रित होनी चाहिए। प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद और पता, विषय, संबोधन तथा समापन आवश्यक हैं।

चरण 1: पत्र की रूपरेखा बनाइए पहले बाढ़ से मकानों, फसलों और आवागमन को हुई क्षति बताइए। फिर सुरक्षित आश्रय, भोजन, पेयजल और चिकित्सा की कमी का उल्लेख कीजिए। अंत में बचाव दल, पर्याप्त राहत सामग्री, चिकित्सा शिविर तथा पुनर्वास की माँग रखिए। नीचे एक नमूना पत्र दिया गया है; इसमें प्रयुक्त स्थान और प्रेषक का विवरण पत्र का उदाहरण है।

चरण 2: पूरा पत्र लिखिए ग्राम रामपुर, डाकघर रामपुर
जिला पटना, बिहार
दिनांक: 15 अगस्त, 2004

सेवा में,
माननीय मुख्यमंत्री महोदय,
बिहार सरकार, पटना।

विषय: बाढ़ से हुई तबाही और अपर्याप्त राहत कार्यों के संबंध में तत्काल कार्रवाई का अनुरोध।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि हमारे क्षेत्र में लगातार वर्षा और नदी का जलस्तर बढ़ने से भीषण बाढ़ आ गई है। अनेक मकान क्षतिग्रस्त हो गए हैं तथा खेतों में खड़ी फसलें डूब गई हैं। कई परिवार ऊँचे स्थानों पर खुले आकाश के नीचे शरण लिए हुए हैं। संपर्क मार्ग डूब जाने से लोगों का सुरक्षित स्थानों तक पहुँचना भी कठिन हो गया है।

प्रशासन द्वारा भेजी गई राहत सामग्री प्रभावित परिवारों की आवश्यकता की तुलना में बहुत कम है। भोजन और स्वच्छ पेयजल की कमी से विशेष रूप से बच्चों तथा वृद्धों की स्थिति चिंताजनक है। गंदे पानी और जलभराव से बीमारियाँ फैलने की आशंका है, जबकि पर्याप्त दवाइयाँ और चिकित्सा दल उपलब्ध नहीं हैं। पशुओं के लिए चारे की भी व्यवस्था नहीं हो पाई है।

अतः आपसे अनुरोध है कि पर्याप्त नावों और प्रशिक्षित बचाव दलों को तत्काल भेजकर फँसे लोगों को सुरक्षित निकाला जाए। ऊँचे स्थानों पर राहत शिविर स्थापित कर भोजन, पेयजल, वस्त्र और आवश्यक दवाइयाँ पहुँचाई जाएँ। मोबाइल चिकित्सा दल भेजे जाएँ तथा राहत वितरण की नियमित निगरानी की जाए, ताकि सहायता सभी जरूरतमंदों तक पहुँचे। क्षति का सर्वेक्षण कर पीड़ित परिवारों के पुनर्वास और किसानों की सहायता की व्यवस्था भी की जाए।

आशा है कि आप इस गंभीर स्थिति पर शीघ्र ध्यान देकर संबंधित अधिकारियों को प्रभावी कार्रवाई के निर्देश देंगे।

धन्यवाद।
भवदीय,
अमित कुमार
क्षेत्र के निवासियों की ओर से

चरण 3: निष्कर्ष इस पत्र में बाढ़ की तबाही, मौजूदा राहत की अपर्याप्तता और तत्काल बचाव, चिकित्सा तथा पुनर्वास की माँगों को निर्धारित औपचारिक प्रारूप में प्रस्तुत किया गया है।

त्वरित सुझाव: पत्र में समस्या बताने के बाद हर प्रमुख आवश्यकता के अनुरूप ठोस माँग जोड़िए, जैसे दूषित पानी के लिए स्वच्छ पेयजल और बीमारी की आशंका के लिए चिकित्सा शिविर।

14(क). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

राजनीति और अपराध-जगत् [10 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारात्मक निबंध में विषय का परिचय, समस्या के कारण और परिणाम, सुधार के उपाय तथा सार्थक उपसंहार क्रमबद्ध रूप में आते हैं।
- राजनीति के अपराधीकरण पर लिखते समय लोकतांत्रिक आदर्शों और वास्तविक समस्या का अंतर स्पष्ट करना चाहिए। किसी व्यक्ति या दल पर निराधार आरोप लगाने के स्थान पर तर्कपूर्ण विवेचन आवश्यक है।

चरण 1: विषय की रूपरेखा निर्धारित कीजिए भूमिका में राजनीति का जनसेवा से संबंध बताइए। मुख्य विवेचन में धनबल, बाहुबल, संरक्षण और मतदाताओं की विवशताओं से बनने वाले संबंध की चर्चा कीजिए। इसके बाद निष्पक्ष प्रशासन, जनविश्वास और योग्य नेतृत्व पर पड़ने वाले प्रभाव बताइए। अंतिम अनुच्छेद में राजनीतिक दलों, संस्थाओं और नागरिकों की जिम्मेदारी जोड़िए। नीचे लगभग 300 शब्दों का आदर्श निबंध है।

चरण 2: पूरा निबंध लिखिए **राजनीति और अपराध-जगत्**

राजनीति का मूल उद्देश्य जनसेवा, न्याय और समाज का विकास है। लोकतंत्र में जनता अपने प्रतिनिधियों को इसलिए चुनती है कि वे उसकी समस्याएँ सुलझाएँ और अधिकारों की रक्षा करें। किंतु जब सत्ता प्राप्त करने के लिए अपराधियों का सहयोग लिया जाता है, तब राजनीति का स्वरूप विकृत होने लगता है। राजनीति और अपराध का गठजोड़ लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए गंभीर चुनौती है।

इस संबंध के पीछे धनबल, बाहुबल और सत्ता की लालसा प्रमुख कारण हैं। चुनाव में अनुचित धन का प्रयोग तथा मतदाताओं को भयभीत करने की प्रवृत्ति अपराधी तत्वों को अवसर देती है। बदले में वे राजनीतिक संरक्षण चाहते हैं। कभी अपराधी स्वयं राजनीति में प्रवेश कर अपना प्रभाव बढ़ाने का प्रयास करते हैं। जाति, धर्म और निजी लाभ के आधार पर मतदान करने की प्रवृत्ति भी योग्य तथा ईमानदार नेतृत्व को पीछे धकेल सकती है।

इस गठजोड़ का सबसे अधिक नुकसान सामान्य नागरिक को होता है। प्रशासन पर अनुचित दबाव पड़ता है, शिकायत करने वाले भयभीत होते हैं और न्याय की निष्पक्षता पर संदेह बढ़ता है। सार्वजनिक संसाधन जनकल्याण के बजाय निजी स्वार्थों में लगने लगते हैं। ईमानदार लोगों का राजनीति से दूर होना इस समस्या को और गहरा करता है। धीरे-धीरे जनता का लोकतांत्रिक संस्थाओं पर विश्वास कमजोर पड़ सकता है।

सुधार के लिए राजनीतिक दलों को प्रत्याशियों के चयन में चरित्र और सार्वजनिक सेवा को महत्त्व देना चाहिए। चुनावी खर्च में पारदर्शिता, स्वतंत्र जाँच और समयबद्ध न्याय आवश्यक हैं। आरोप और सिद्ध अपराध में अंतर रखते हुए निष्पक्ष प्रक्रिया अपनाई जानी चाहिए। नागरिकों को भी डर, लालच और संकीर्ण पहचान से ऊपर उठकर मतदान करना होगा। जागरूक मीडिया तथा शिक्षा जनमत को जिम्मेदार बना सकते हैं।

राजनीति को अपराध से मुक्त करना केवल सरकार का कार्य नहीं, पूरे समाज की जिम्मेदारी है। जब सत्ता के स्थान पर सेवा और भय के स्थान पर कानून का सम्मान प्रधान होगा, तभी लोकतंत्र वास्तव में जनता की शक्ति बन सकेगा।

चरण 3: निष्कर्ष निबंध राजनीति और अपराध के संबंध को कारण, दुष्परिणाम और समाधान के क्रम में स्पष्ट करता है तथा लोकतंत्र की रक्षा के लिए संस्थागत निष्पक्षता और नागरिक जिम्मेदारी पर बल देता है।

त्वरित सुझाव: इस विषय में केवल अपराधी नेताओं की निंदा न लिखें; गठजोड़ कैसे बनता है, जनता पर क्या प्रभाव पड़ता है और उसे कैसे रोका जा सकता है, ये तीन पक्ष अवश्य जोड़ें।

14(ख). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

ग्रामीण जीवन [10 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वर्णनात्मक और विचारात्मक निबंध में जीवन के दृश्य, उसकी विशेषताएँ, कठिनाइयाँ और विकास की संभावनाएँ संतुलित रूप से प्रस्तुत की जाती हैं।
- ग्रामीण जीवन का चित्र केवल प्राकृतिक सुंदरता तक सीमित नहीं होना चाहिए; श्रम, सामाजिक संबंध, आजीविका और बुनियादी सुविधाओं का विवेचन भी आवश्यक है।

चरण 1: निबंध का क्रम बनाइए भूमिका में गाँवों के महत्त्व का परिचय दीजिए। फिर प्रकृति से निकटता, खेती और सामुदायिक जीवन की विशेषताएँ बताइए। अगले अनुच्छेद में शिक्षा, स्वास्थ्य, सिंचाई और रोजगार की समस्याएँ रखिए। अंत में सुविधाओं के विस्तार और स्थानीय सहभागिता के माध्यम से विकास का मार्ग सुझाइए। निबंध में गाँव का आदर्शीकरण करने के बजाय उसके गुणों और कठिनाइयों, दोनों को स्थान दीजिए। नीचे लगभग 300 शब्दों का मॉडल निबंध है।

चरण 2: पूरा निबंध लिखिए **ग्रामीण जीवन**

भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में गाँवों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। खेतों की हरियाली, पेड़ों की छाया, पशुओं की चहल-पहल और ऋतुओं का परिवर्तन ग्रामीण जीवन को प्रकृति से जोड़ते हैं। यहाँ मनुष्य का दैनिक जीवन मिट्टी, पानी और श्रम के निकट रहता है। गाँव केवल रहने का स्थान नहीं, अनेक परंपराओं और सामूहिक अनुभवों का केंद्र भी है।

गाँवों में दिन प्रायः जल्दी शुरू होता है। किसान खेतों की ओर जाते हैं और अनेक परिवार पशुपालन, कुटीर उद्योग या छोटे व्यवसायों में जुटते हैं। खेती में पूरे परिवार का सहयोग दिखाई देता है। वर्षा और फसल के साथ लोगों की आशाएँ जुड़ी रहती हैं। मेले, त्योहार और लोकगीत सामुदायिक जीवन में उल्लास भरते हैं। सुख-दुख में पड़ोसियों का साथ तथा आपसी परिचय ग्रामीण समाज की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ हैं।

किंतु ग्रामीण जीवन की वास्तविकता केवल सुंदर दृश्यों और आत्मीय संबंधों तक सीमित नहीं है। कई गाँवों में अच्छी शिक्षा, चिकित्सा, स्वच्छ पेयजल और सुविधाजनक आवागमन की कमी रहती है। खेती पर अत्यधिक निर्भरता, अनिश्चित वर्षा और उपज का उचित मूल्य न मिलना किसानों की कठिनाइयाँ बढ़ाते हैं। रोजगार के सीमित अवसर युवाओं को शहरों की ओर ले जाते हैं। जातिगत भेदभाव, रूढ़ियाँ और स्त्रियों के लिए असमान अवसर भी सामाजिक प्रगति में बाधा बन सकते हैं।

इन समस्याओं के समाधान के लिए ग्राम विकास को व्यापक दृष्टि से देखना होगा। बेहतर विद्यालय, स्वास्थ्य केंद्र, सिंचाई और सड़कें आवश्यक हैं। स्थानीय उद्योगों, कौशल प्रशिक्षण और सहकारी प्रयासों से रोजगार बढ़ाया जा सकता है। स्वच्छता, जल संरक्षण और महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहन मिलना चाहिए। योजनाओं के निर्माण तथा निगरानी में ग्रामीणों की सक्रिय भागीदारी विकास को अधिक उपयोगी बनाती है।

आदर्श ग्रामीण जीवन वह है जहाँ प्रकृति की निकटता और सामाजिक सहयोग के साथ सम्मानजनक आजीविका तथा आधुनिक सुविधाएँ भी उपलब्ध हों। गाँवों की उन्नति से ही देश का विकास अधिक संतुलित और समावेशी बन सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष निबंध ग्रामीण जीवन की प्राकृतिक और सामाजिक विशेषताओं के साथ उसकी वास्तविक समस्याएँ भी प्रस्तुत करता है। शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार तथा सहभागी विकास के विस्तार से ग्रामीण जीवन अधिक समृद्ध बन सकता है।

त्वरित सुझाव: ग्रामीण जीवन पर लिखते समय हरियाली और त्योहारों के साथ किसान का श्रम, सुविधाओं की कमी तथा सुधार के ठोस उपाय जोड़ें, ताकि चित्र संतुलित और पूर्ण बने।

14(ग). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

कामकाजी नारी और उसकी समस्याएँ [10 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में कामकाजी स्त्री के योगदान, घर और कार्यस्थल की कठिनाइयों तथा उनके व्यावहारिक समाधानों का संतुलित विवेचन आवश्यक है।
- निबंध में शीर्षक, विषयानुकूल प्रस्तावना, क्रमबद्ध मुख्य विवेचन और उपसंहार रखें; भाषा सरल तथा अनुच्छेद परस्पर संबद्ध हों।

चरण 1: प्रारूप और विषय की दिशा दिए गए विषय पर लगभग 300 शब्दों का निबंध लिखना है। शीर्षक के बाद विषय का संक्षिप्त परिचय दें। आगे विचारों को अलग-अलग अनुच्छेदों में विकसित करें। निबंध में पत्र का संबोधन या समापन नहीं होता।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना प्रस्तावना में स्त्री की बदलती भूमिका बताएँ। मुख्य भाग में दोहरी जिम्मेदारी, भेदभाव और सुरक्षा की समस्याएँ रखें; फिर परिवार, संस्थान और समाज के स्तर पर समाधान सुझाएँ। उपसंहार सम्मान तथा समान अवसर के विचार पर केंद्रित हो।

चरण 3: पूर्ण नमूना निबंध **कामकाजी नारी और उसकी समस्याएँ**

आज की नारी शिक्षा, चिकित्सा, प्रशासन, उद्योग तथा विज्ञान सहित अनेक क्षेत्रों में सक्रिय योगदान दे रही है। उसकी पहचान केवल परिवार की देखभाल तक सीमित नहीं है। वह अपनी प्रतिभा और परिश्रम से आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करती है तथा देश के विकास में भागीदार बनती है। फिर भी कामकाजी नारी की सफलता के पीछे अनेक संघर्ष छिपे होते हैं।

उसकी सबसे बड़ी समस्या घर और कार्यस्थल की दोहरी जिम्मेदारी है। कार्यालय से लौटने पर भी खाना बनाना, बच्चों की पढ़ाई और बुजुर्गों की देखभाल प्रायः उसी का कर्तव्य समझा जाता है। परिवार के सदस्य सहयोग न करें तो उसे आराम और अपने विकास के लिए पर्याप्त समय नहीं मिलता। लगातार काम करने से शारीरिक थकान तथा मानसिक तनाव बढ़ते हैं।

कार्यस्थल पर भी सभी महिलाओं को समान अवसर नहीं मिलते। कहीं समान काम के लिए असमान वेतन मिलता है, तो कहीं पदोन्नति में उनके कौशल की उपेक्षा होती है। अनुचित टिप्पणियाँ, उत्पीड़न तथा असुरक्षित आवागमन उनकी कठिनाइयों को बढ़ाते हैं। मातृत्व के दौरान आवश्यक सुविधाओं और शिशुओं की देखभाल के केंद्रों का अभाव भी एक गंभीर समस्या है। कुछ लोग आज भी स्त्री की स्वतंत्रता को संदेह की दृष्टि से देखते हैं।

इन समस्याओं का समाधान केवल महिला के अधिक परिश्रम में नहीं, बल्कि सामूहिक जिम्मेदारी में है। परिवार में घरेलू कार्यों का न्यायपूर्ण बँटवारा होना चाहिए। संस्थानों को सुरक्षित वातावरण, समान वेतन, योग्यता पर आधारित पदोन्नति तथा मातृत्व संबंधी सुविधाएँ देनी चाहिए। शिकायतों की निष्पक्ष जाँच और सार्वजनिक परिवहन की सुरक्षा भी आवश्यक है।

कामकाजी नारी परिवार की प्रतिद्वंद्वी नहीं, उसकी शक्ति है। उसके निर्णयों और श्रम को सम्मान देकर ही वास्तविक समानता स्थापित की जा सकती है। ऐसा समाज ही प्रगतिशील कहलाएगा जहाँ स्त्री को अपने सपने पूरे करने के लिए अवसर, सहयोग और सुरक्षा प्राप्त हों।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार निबंध में कामकाजी नारी के योगदान और कठिनाइयों के साथ समानता, सहयोग तथा सुरक्षा की आवश्यकता स्पष्ट होती है।

त्वरित सुझाव: हर समस्या के साथ उसका ठोस समाधान जोड़ें; घरेलू सहयोग और कार्यस्थल की सुरक्षा, दोनों पक्ष अवश्य शामिल करें।

14(घ). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

जब आवै संतोष-धन, सब धन धूरि समान [10 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सूक्तिपरक निबंध में उक्ति का भाव स्पष्ट करके संतोष का महत्व, लोभ के दुष्परिणाम और संतोष तथा पुरुषार्थ का संबंध समझाया जाता है।

- निबंध में शीर्षक, विषयानुकूल प्रस्तावना, क्रमबद्ध मुख्य विवेचन और उपसंहार रखें; भाषा सरल तथा अनुच्छेद परस्पर संबद्ध हों।

चरण 1: प्रारूप और विषय की दिशा दिए गए विषय पर लगभग 300 शब्दों का निबंध लिखना है। शीर्षक के बाद विषय का संक्षिप्त परिचय दें। आगे विचारों को अलग-अलग अनुच्छेदों में विकसित करें। निबंध में पत्र का संबोधन या समापन नहीं होता।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना पहले सुख की खोज से विषय का परिचय दें। फिर संतोष को मानसिक शांति की संपदा के रूप में समझाएँ और धन की सीमाएँ बताएँ। मुख्य विवेचन में लोभ के परिणाम तथा संतोष और निष्क्रियता के अंतर को रखें। अंत में आधुनिक जीवन के लिए उक्ति की उपयोगिता स्थापित करें।

चरण 3: पूर्ण नमूना निबंध **जब आवै संतोष-धन, सब धन धूरि समान**

मनुष्य जीवन भर सुख की खोज करता है। कोई धन में सुख देखता है, कोई पद में और कोई प्रसिद्धि में। किंतु इच्छाओं की सीमा न हो तो बड़ी उपलब्धि भी छोटी लगने लगती है। ऐसे में संतोष का महत्व स्पष्ट होता है। संतोष वह आंतरिक संपदा है जो उपलब्ध साधनों के प्रति कृतज्ञता और मन को शांति देती है।

विषय की उक्ति का आशय है कि संतोष प्राप्त हो जाने पर अन्य धन का महत्व उसके सामने धूल के समान रह जाता है। धन से भोजन, वस्त्र, आवास और सुविधाएँ खरीदी जा सकती हैं, परंतु मन की प्रसन्नता का मूल्य निर्धारित नहीं किया जा सकता। असंतुष्ट व्यक्ति दूसरों की सफलता देखकर दुखी होता है और अपनी उपलब्धियों का आनंद भी नहीं ले पाता।

असीम लालसा मनुष्य को अनुचित मार्ग पर ले जा सकती है। अधिक पाने की होड़ में वह सत्य, ईमानदारी और संबंधों की उपेक्षा करने लगता है। इसके विपरीत संतुष्ट व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं और इच्छाओं के बीच अंतर समझता है। वह परिश्रम से प्राप्त साधनों का सदुपयोग करता है तथा दूसरों के सुख में प्रसन्न होता है। इसलिए उसका जीवन अपेक्षाकृत सरल और शांत रहता है।

संतोष का अर्थ आलस्य, निष्क्रियता या अन्याय सहना नहीं है। विद्यार्थी को अध्ययन और श्रमिक को अपने कार्य में निरंतर प्रयत्न करना चाहिए। बेहतर जीवन की आकांक्षा स्वाभाविक है; समस्या तब उत्पन्न होती है जब आकांक्षा अंधे लोभ में बदल जाए। उचित लक्ष्य के लिए मेहनत करते हुए परिणाम को धैर्य से स्वीकार करना संतोष का स्वस्थ रूप है।

आज प्रदर्शन और उपभोग की बढ़ती प्रवृत्ति ने अनावश्यक इच्छाओं को बढ़ाया है। हमें तुलना की आदत छोड़कर स्वास्थ्य, परिवार, मित्रता और श्रम की गरिमा को भी महत्व देना चाहिए। संतोष और पुरुषार्थ का संतुलन ही स्थायी सुख का आधार है। जिसके मन में यह संतुलन है, वही सच्चे अर्थों में समृद्ध है।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार निबंध में संतोष को मन की वास्तविक समृद्धि मानते हुए उसके साथ निरंतर पुरुषार्थ का महत्व स्थापित होता है।

त्वरित सुझाव: संतोष को आलस्य न बताएँ; परिश्रम जारी रखते हुए असीम लोभ से बचने का अंतर एक अलग अनुच्छेद में स्पष्ट करें।

14(ङ). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबन्ध लिखिए :

सबसे न्यारा देश हमारा [10 अंक]

हल:

अवधारणा:

- देशप्रेम पर आधारित निबंध में प्राकृतिक और सांस्कृतिक विशेषताओं के साथ नागरिक कर्तव्यों का विवेचन विषय को पूर्ण बनाता है।
- निबंध में शीर्षक, विषयानुकूल प्रस्तावना, क्रमबद्ध मुख्य विवेचन और उपसंहार रखें; भाषा सरल तथा अनुच्छेद परस्पर संबद्ध हों।

चरण 1: प्रारूप और विषय की दिशा दिए गए विषय पर लगभग 300 शब्दों का निबंध लिखना है। शीर्षक के बाद विषय का संक्षिप्त परिचय दें। आगे विचारों को अलग-अलग अनुच्छेदों में विकसित करें। निबंध में पत्र का संबोधन या समापन नहीं होता।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना प्रस्तावना में भारत के प्रति प्रेम व्यक्त करें। मुख्य भाग में भूगोल, विविधता में एकता, स्वतंत्रता और राष्ट्रीय योगदान का क्रम रखें। उपसंहार में समस्याओं के प्रति सजगता और नागरिक दायित्व जोड़ें, ताकि देशप्रेम कर्म से जुड़ा दिखाई दे।

चरण 3: पूर्ण नमूना निबंध **सबसे न्यारा देश हमारा**

भारत हमारा प्रिय देश है। उसकी प्राकृतिक सुंदरता, सांस्कृतिक विविधता और समृद्ध परंपराएँ उसे विशिष्ट बनाती हैं। यहाँ अनेक भाषाएँ,

वेशभूषाएँ, पर्व और जीवनशैलियाँ मिलती हैं, फिर भी देशवासियों को एक साझा राष्ट्रीय भावना जोड़ती है। अपने देश पर गर्व करना उसके प्रति प्रेम और जिम्मेदारी का भाव जगाता है।

उत्तर में हिमालय की ऊँची चोटियाँ, विस्तृत मैदान, रेगिस्तान, वन और समुद्रतट भारत की भौगोलिक विविधता के परिचायक हैं। नदियाँ हमारी भूमि को सींचती हैं और कृषि को आधार देती हैं। अलग-अलग प्रदेशों की जलवायु तथा प्राकृतिक संपदा ने लोगों के भोजन, रहन-सहन और व्यवसायों को अनेक रंग दिए हैं। प्रकृति का यह वैभव हमारी अनमोल धरोहर है।

भारत की विशेष पहचान उसकी अनेकता में एकता है। विभिन्न धर्मों और समुदायों के लोग यहाँ साथ रहते हैं। लोकगीत, नृत्य, साहित्य और कलाएँ जीवन को समृद्ध बनाते हैं। अतिथि का सम्मान, पारिवारिक अपनापन और परस्पर सहायता जैसे मूल्य समाज को जोड़ते हैं। हमारी संस्कृति ने समय के साथ नए विचारों को अपनाकर अपने स्वरूप का विकास किया है।

देश की स्वतंत्रता अनेक स्त्री-पुरुषों के संघर्ष और बलिदान से मिली है। स्वतंत्र भारत का लोकतंत्र नागरिकों को भागीदारी का अवसर देता है। किसान, श्रमिक, शिक्षक, सैनिक और वैज्ञानिक अपने श्रम से देश को आगे बढ़ाते हैं। शिक्षा, विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में हमारी प्रगति आशा जगाती है। यह उपलब्धि सभी नागरिकों के सहयोग से और मजबूत हो सकती है।

देशप्रेम केवल गौरवगान तक सीमित नहीं रहना चाहिए। गरीबी, अशिक्षा, भेदभाव और प्रदूषण जैसी समस्याओं को दूर करना भी हमारा कर्तव्य है। हमें सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा, स्वच्छता, ईमानदारी और समानता को अपने व्यवहार में उतारना चाहिए। भारत की विशिष्टता का सम्मान करते हुए दूसरे देशों का आदर करना भी आवश्यक है। हमारा देश तभी और सुंदर बनेगा, जब प्रत्येक नागरिक उसके विकास में जिम्मेदारी से योगदान देगा।

चरण 4: निष्कर्ष इस प्रकार निबंध में भारत की प्राकृतिक और सांस्कृतिक विशिष्टता के साथ जिम्मेदार नागरिकता का संदेश सामने आता है।

त्वरित सुझाव: देश की विशेषताओं के बाद नागरिक कर्तव्य अवश्य लिखें; विविधता, एकता और जिम्मेदारी के बीच स्पष्ट संबंध बनाएँ।